आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 33 | अंक : 67 वाँ | संयुक्तांक (अप्रैल, 2022-सितम्बर, 2022)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

प्रहरी परिवार

श्री रामावतार शर्मा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री आदर्श अग्रवाल
उप महालेखाकार

श्री शिव शंकर
उप महालेखाकार

सुश्री पुष्पलता
उप महालेखाकार

श्री के.एस.एम. रफी
उप महालेखाकार

श्री राकेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विकास कुमार नं.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार नं.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिवाकर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विनय कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शंकरा नन्द झा
हिन्दी अधिकारी

श्री वीरेन्द्र साहू
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अभिषेक कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

67वाँ अंक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
महालेखाकार भवन,
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 33	अंक : 67 वाँ	संयुक्तांक (अप्रैल, 2022-सितम्बर, 2022)

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

प्रकाशन : प्रहरी

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने है। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादक मंडल

प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

आवरण पृष्ठ : बिहार विधान सभा परिसर में स्थापित शताब्दी स्मृति स्तंभ कल्पतरु वृक्ष जिसका अनावरण माननीय प्रधान मंत्री, भारत सरकार ने किया था।

साज-सज्जा : निशा ग्राफिक्स, नाला रोड, पटना-800 004
मो०- 9708124620

मूल्य : राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 33 | अंक : 67 वाँ | संयुक्तांक (अप्रैल, 2022-सितम्बर, 2022)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

श्री रामावतार शर्मा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

श्री आदर्श अग्रवाल	उप महालेखाकार
श्री शिव शंकर	उप महालेखाकार
सुश्री पुष्पलता	उप महालेखाकार
श्री के.एस.एम. रफी	उप महालेखाकार
श्री राकेश कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री विकास कुमार नं.1	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री दिवाकर राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री विनय कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं.1	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (संपादक)
श्री राजू कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री शंकरा नन्द झा	हिन्दी अधिकारी
श्री वीरेन्द्र साहू	कनिष्ठ अनुवादक
श्री अभिषेक कुमार	कनिष्ठ अनुवादक

इस अंक में

क्रम0 सं0	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
	संदेश			07
	संपादकीय			10
1.	भारतीय संदर्भ में वैश्विक महामारीःएक पुनरावलोकन	आलेख	विकास कुमार नं.–1	11
2.	गुडाकेश	आलेख	कृष्ण मुरारी जयपुरियार	17
3.	जनकवि नागार्जुन	आलेख	वीरेन्द्र साहू	19
4.	सच के बाद	कविता	जय प्रकाश मल्ल	23
5.	बच्चे और बंदूक	कविता	मनोज कुमार नं.–1	24
6.	पर्यावरण संरक्षण और मानव जीवन	आलेख	अभिषेक कुमार	25
7.	तीज	कविता	अनिल कुमार नं.–5	27
8.	बचपन फिर तुम लौट के आओ	कविता	श्रीमती दिब्या नाथ	28
9.	भाई	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	29
10.	मन	कविता	सुशील कुमार ठाकुर	30
11.	माँ जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी	आलेख	शंकरा नंद झा	31
12.	माँ	कविता	ललन कुमार सिंह	35
13.	मैं पेड़ हूँ	कविता	बीरेन्द्र कुमार नं.–4	36
14.	ईमानदारी	कविता	रूपेश कुमार सिंह	37
15.	बिहार कॉरपोरेट टी20 क्रिकेट लीग 2022 का विजेताः सिविल ऑडिट	रिपोर्ट		39
16.	चित्रकारी			40–41
17.	गज़ल	कविता	अताउल्ला हुसैन	42
18.	हमारी बिटिया रानी	कविता	विजय कुमार ठाकुर	43
19.	हम पेड़ जरूर लगायेंगे	कविता	गोपाल कुमार	44
20.	महारानी की नींद	कहानी	अजय कुमार झा	45
21.	अम्लीय वर्षा	आलेख	अमित कुमार झा	51
22.	एक टीस	कविता	राजू कुमार सिंह	52
23.	प्रहरी 66वें अंक (प्रथम ई–संस्करण) का लोकार्पण की तस्वीरें			53
24.	महिला दिवस समारोह के मनोरम दृश्य			54–55
25.	कार्यालय के कार्मिकों द्वारा वृक्षारोपण			56

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार

संदेश

यह अपार हर्ष का विषय है कि कार्यालय की वैभवशाली हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 67वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार व उन्नति में हिन्दी पत्रिकाओं का अमूल्य व अद्वितीय योगदान रहा है । यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें। जहाँ तक संभव हो टिप्पण एवं प्रारूपण मूल रूप से हिन्दी में ही करें। "प्रहरी" इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक सशक्त साधन है। सरकारी काम–काज में राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास एवं कार्मिकों की सृजनशील प्रतिभा की उन्नति में "प्रहरी" की प्रभावपूर्ण भूमिका रही है।

यह प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों/मंत्रालयों/स्वायत्त निकायों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ हिन्दी दिवस के सुअवसर पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के नेतृत्व में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में 14 सितम्बर, 2022 को सूरत, गुजरात में किया गया। जिसमें राजभाषा से जुड़े सभी कार्मिकों को शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। यह आयोजन राजभाषा क्रियान्वयन हेतु अति प्रेरक पहल है। इस वर्ष भी कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा के आयोजन के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को संघ की राजभाषा में शत–प्रतिशत कार्य करने हेतु प्रेरित किया गया है।

कार्यालय के जिन कार्मिकों ने अपनी सृजनात्मक व बहुआयामी प्रतिभा से पत्रिका के इस अंक को संवारा है, उन सभी को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ । मुझे विश्वास है "प्रहरी" अहर्निश अपनी सृजन–यात्रा को ऐसे ही गतिशील बनाए रखेगी ।

जय हिन्द !

(रामावतार शर्मा)

आपका पत्र मिला

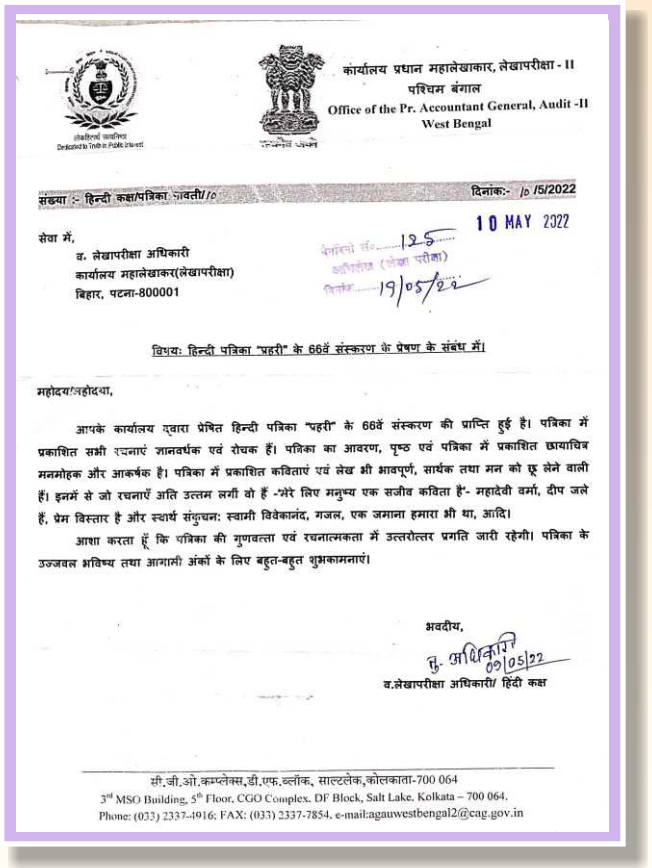

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका प्रावती/10 दिनांक:- 10 /5/2022

10 MAY 2022

सेवा में,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना-800001

दैनंदिनी सं० 125
अभिलेख (लेखा परीक्षा)
दिनांक 19/05/22

विषयः हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 66वें संस्करण के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 66वें संस्करण की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र मनमोहक और आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं वो हैं -'मेरे लिए मनुष्य एक सजीव कविता है'- महादेवी वर्मा, दीप जले हैं, प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन: स्वामी विवेकानंद, गजल, एक जमाना हमारा भी था, आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
तु. अधिकारी 09/05/22
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex. DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

---

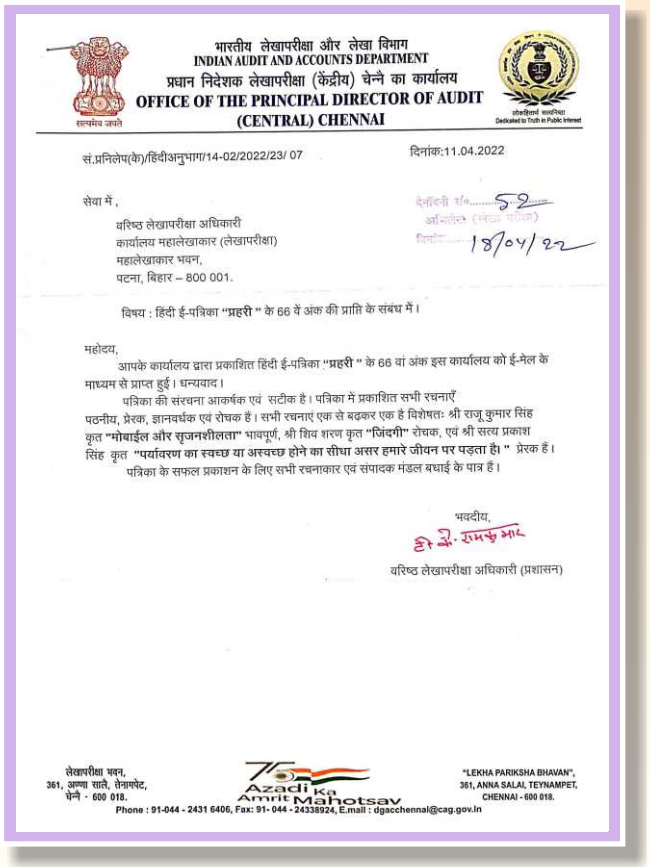

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

सं.प्रनिलेप(के)/हिंदीअनुभाग/14-02/2022/23/ 07 दिनांक:11.04.2022

सेवा में ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
महालेखाकार भवन,
पटना, बिहार – 800 001.

दैनंदिनी सं० 52
अभिलेख (लेखा परीक्षा)
दिनांक 18/04/22

विषय : हिंदी ई-पत्रिका **"प्रहरी "** के 66 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका **"प्रहरी "** के 66 वां अंक इस कार्यालय को ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढकर एक है विशेषतः श्री राजू कुमार सिंह कृत **"मोबाईल और सृजनशीलता"** भावपूर्ण, श्री शिव शरण कृत **"जिंदगी"** रोचक, एवं श्री सत्य प्रकाश सिंह कृत **"पर्यावरण का स्वच्छ या अस्वच्छ होने का सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ता है। "** प्रेरक हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

लेखापरीक्षा भवन,
361, अण्णा सालै, तेनामपेट,
चेन्नै - 600 018.

Azadi Ka Amrit Mahotsav

"LEKHA PARIKSHA BHAVAN",
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET,
CHENNAI - 600 018.

Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91- 044 - 24338924, E.mail : dgacchennai@cag.gov.in

---

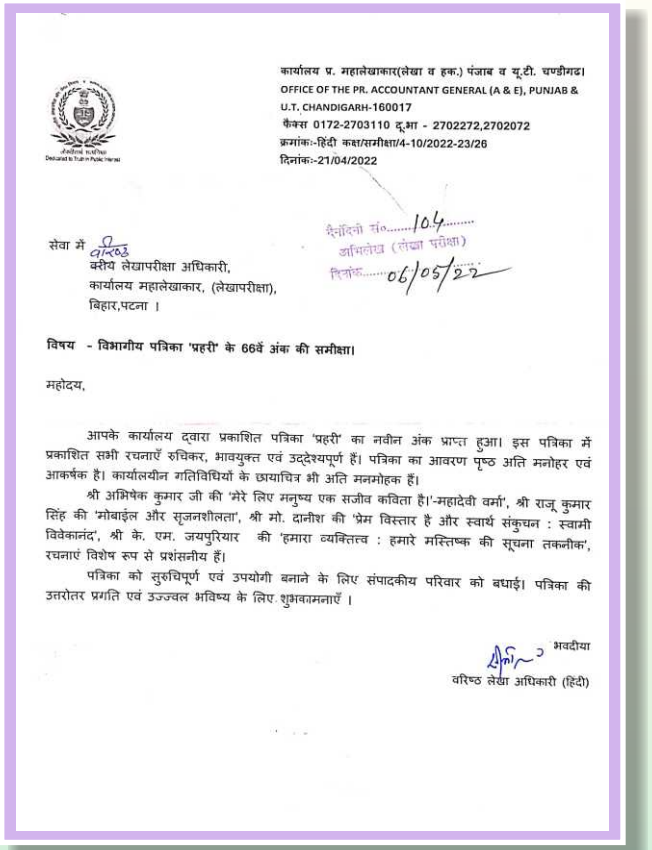

कार्यालय प्र. महालेखाकार(लेखा व हक.) पंजाब व यू.टी. चण्डीगढ।
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB & U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स 0172-2703110 दू.भा - 2702272,2702072
क्रमांकः-हिंदी कक्ष/समीक्षा/4-10/2022-23/26
दिनांकः-21/04/2022

सेवा में वरिष्ठ
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार, (लेखापरीक्षा),
बिहार,पटना ।

दैनंदिनी सं० 104
अभिलेख (लेखा परीक्षा)
दिनांक 06/05/22

विषय - विभागीय पत्रिका 'प्रहरी' के 66वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'प्रहरी' का नवीन अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्री अभिषेक कुमार जी की 'मेरे लिए मनुष्य एक सजीव कविता है।'-महादेवी वर्मा', श्री राजू कुमार सिंह की 'मोबाइल और सृजनशीलता', श्री मो. दानीश की 'प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन : स्वामी विवेकानंद', श्री के. एम. जयपुरियार की 'हमारा व्यक्तित्व : हमारे मस्तिष्क की सूचना तकनीक', रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

भवदीया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)

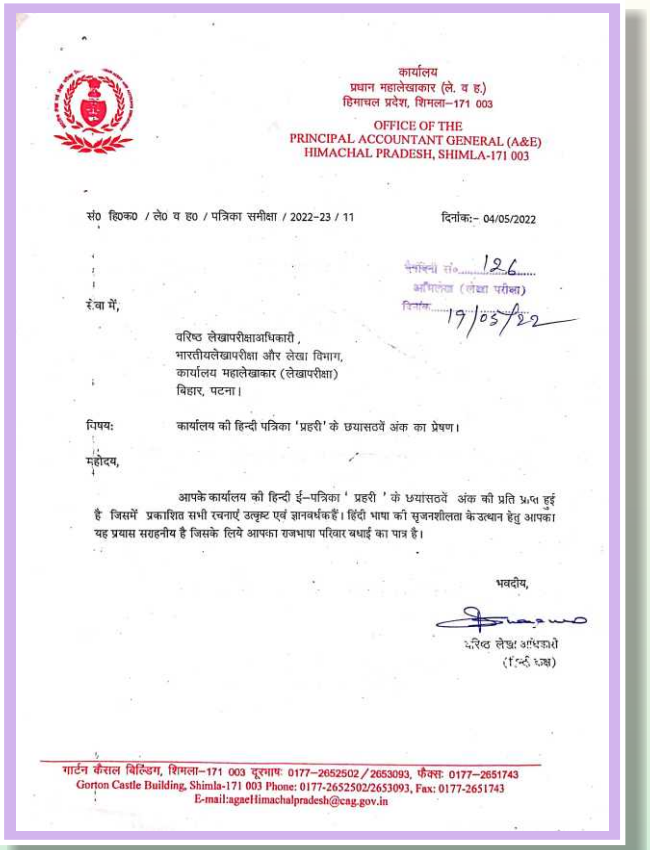

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं0 हि0क0 / ले0 व ह0 / पत्रिका समीक्षा / 2022–23 / 11 दिनांक:– 04/05/2022

दैनंदिनी सं० 126
अभिलेख (लेखा परीक्षा)
दिनांक 19/05/22

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षाअधिकारी ,
भारतीयलेखापरीक्षा और लेखा विभाग,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना।

विषयः कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के छयासठवें अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई–पत्रिका ' प्रहरी ' के छयासठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 2653093, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2653093, Fax: 0177-2651743
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

आपका पत्र मिला

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना,
सैफाबाद, हैदराबाद - 500004.

सं.रा.भा.अ./ले. व ह.(ते.रा.)/फा.-53/पत्रिका-अभिमत/2022-23/जा.सं.327769 दिनांकः 01.06.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार,
महालेखाकार भवन, बीरचन्द पटेल मार्ग,
पटना - 800001.

विषयः आपकी हिंदी पत्रिका **"प्रहरी"** के **66वें** अंक की ऑनलाईन प्राप्ति - संबंधित।

महोदय/महोदया,

हम सभी जानते है कि किसी कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका द्वारा उस कार्यालय के साथ-साथ अन्य कार्यालयों के कार्यालय सदस्यों में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम योगदान दिया जाता है।

आपके कार्यालय की पत्रिका **"प्रहरी"** हमारे कार्यालय को ऑनलाईन प्राप्त हुई है उसके लिए धन्यवाद। आपकी पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनायें/लेख प्रेरणादायी एवं रोचक है।

आपकी पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए इससे जुड़े समस्त सदस्यों को बधाई; साथ ही आपकी पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

इसे सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

हस्ता/-
(वजीर सिंह)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष/Telephone- 2223251, 2225766, 2224812

फैक्स/Fax 0612-2225977
Tele Gram | ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं ह0) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हि0अ0/ले0 व ह0/05/प0प्र0/2022-23/
दिनांक 10/05/2022

सेवा में,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना-800001

विषय :- हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' का 66 वां अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 07.04.2022 के द्वारा हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' का 66 वां अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका के सभी रचनाएँ पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

वरीय लेखा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

महालेखाकार (ले0 व ह0) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172-2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/72
दिनांक: 20.05.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
पटना ।

महोदय,

विषय : हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 66वें अंक की ई-प्रति सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 06.04.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 66वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री के. एम. जयपुरियार का लेख 'हमारा व्यक्तित्व- हमारे मस्तिष्क की सूचना तकनीक', श्री मो. दानीश का लेख 'प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन-स्वामी विवेकानंद' एवं श्री राजू कुमार सिंह का लेख 'मोबाइल और सृजनशीलता' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

इसके अतिरिक्त श्री जयप्रकाश मल्ल की कविता 'दीप जले हैं', श्री रामौतार प्रसाद की कविता 'इंसानियत फिर जीतेगी', श्री विकास कुमार नं. 1 की कविता 'अशेष' एवं श्री विजय कुमार ठाकुर की कविता 'किसे सुनाऊँ' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

दैनंदिनी सं॰ 939
अभिलेख (लेखा परीक्षा)
दिनांक 26/07/22

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता020 700-
फोनः ,2289/4111/12/13-033फैक्सः 4060-2289-033
ई मेलः-bresdkolkata@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

19 JUL 2022

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/187 दिनांकः-19.07.2022

सेवा में,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार, (लेखापरीक्षा),
पटना, बिहारः- 800 001

विषयः- हिंदी के त्रैमासिक ई-पत्रिका "प्रहरी" के 66वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 66वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री राजू कुमार सिंह जी का आलेख **'मोबाईल और सृजनशीलता'**, श्री वीरेन्द्र साह जी का आलेख **'प्रकृति, प्रदूषण और हम'**, श्रीमती हीरा कुमारी जी की कविता **'जीने का अर्थ'**, श्री रंजीत कुमार वर्मा जी का आलेख **'एक जमाना हमारा भी था'**, श्री दिलीप कुमार अरोड़ा जी की कविता **'कौआ पूछे इन्सान से'** और श्रीमती दिव्या नाथ, पत्नी श्री सुभाष वर्मा जी की कविता **'वैलेन्टाइन डे-एक आनंदोलन'** अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "प्रहरी" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

सम्पादक की कलम से.....

आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के बाद यह विचारणीय है की राजभाषा हिंदी अपने देश में कहाँ खड़ी है। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में हिंदी से संबंधित संवैधानिक प्रावधान किए गए हैं। भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है। इस नीति को अपनाने के पीछे देश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के हिंदी के संबंध में उनके विचार थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने वर्ष 1917 में एक शैक्षिक सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि वह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है और समस्त भारत वर्ष में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक संपर्क के माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इस देश के लोगों को सीखना आवश्यक है।

75 वर्षों के बाद निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि भारत वर्ष में हिंदी का उतरोत्तर विकास होता गया है । शासन–प्रशासन, संसद विधान मंडलों में इसका प्रयोग काफी बढ़ा है परंतु न्याय–प्रक्रिया, तकनीकी शिक्षा उच्च शिक्षा में इसका प्रयोग नहीं के बराबर है। देश के वर्तमान प्रधानमंत्री ने भी इस बात पर जोर दिया है कि न्यायालय के फैसले हिंदी में होने चाहिए जिससे सामान्य जनता को न्याय फैसले को समझने में आसानी हो।

अपने कार्यालय में भी अधिकांश कार्य हिंदी में होते हैं। जो कर्मचारी या अधिकारी ऐसा नहीं करते असल में वे विदेशी भाषा के गुलामी मानसिकता से उबर नहीं पाए हैं जबकि हिंदी बोलना लिखना अपेक्षाकृत सबसे आसान है। उन्हें याद रखना चाहिए कि परायी भाषा आर्थिक समृद्धि का आधार तो बन सकती है, पर अपनी माटी का चिंतन नहीं दे सकती। जिस भाषा में अपनी माटी का सुगंध ना हो वह अपनी ही धरती पर आदमी को पराया कर देती है।

प्रहरी पत्रिका भी कार्यालय में कर्मचारियों के हिंदी में रचनात्मक प्रतिभा को उभारने, पुष्पित और पल्लवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। इस अंक में भी अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाएं देकर राजभाषा के प्रति अपने प्यार को दर्शाया है। प्रहरी पत्रिका का 66वें संस्करण के अनेक प्रतिभाव अन्य कार्यालयों से प्राप्त हुए जो उत्साहवर्धक है अनेक रचनाकारों एवं पाठकों ने संपादक मंडल से जरूर कहा कि हाथ में पत्रिका लेकर पढ़ने का जो सुखद अनुभव होता है वह ई–पत्रिका में नहीं होता है। निश्चित ही ई–मीडिया और प्रिंट मीडिया के संघर्ष में प्रिंट मीडिया की लोकप्रियता, उपादेयता और विश्वसनीयता बनी हुई है।

पत्रिका में सहयोग तथा दिशानिर्देश देने के लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

आपका

(मनोज कुमार)

भारतीय संदर्भ में वैश्विक महामारी: एक पुनरावलोकन

विकास कुमार नं.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

यों तो वैश्विक महामारी की दौर से ये दुनिया कई बार गुजरी है और हर बुरे वक्त के बाद नवीन जीवन संचार, संदेश के साथ दुनिया सदैव परिवर्तनशील, गतिमान रही है । केवल नहीं बदलता है तो मनुष्य का वह स्वभाव, जिसमें कुछ सहृदय लोग इस अवसर पर मानवता की सेवा में स्वयं को खपा देते हैं तो कुछ निर्दय, निष्ठुर लोग जो हाशिए पर खड़े होकर कटाक्षों, आलोचनाओं के तुणीर–वाण चलाते रहते हैं । सच प्रकृति का चक्र निर्बाध गतिशील रहता है ।

विगत वर्षों से विश्व फिर से महमारी के एक और भीषण दौर से गुजर रहा है । कोविड–19 नामक वायरस जनित इस वैश्विक महामारी के विभिन्न दौर से यथाः प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण से विश्व के कई देश जूझ रहे हैं । मीडिया जगत के लिए नित्य नये समाचार उपलब्ध करा रहे हैं । कोई किसी देश को कसूरवार ठहरा रहा है । वहीं अन्य कुछ खास वर्गों, समूहों को इस महामारी के फैलाव के लिए उत्तरदायी ठहरा रहे हैं । मौतों के अंकगणितीय प्रश्न भी हल किए जा रहे हैं । मुआवजे हेतु मौत के आंकड़ों में वृद्धि–कमी का खेल जारी है । लचर स्वास्थ्य व्यवस्था, इस महामारी से निपटने में जहाँ स्वयं को चुस्त–दुरूस्त करने में सचेष्ट, तत्पर है वहीं कुछ संचार माध्यम सरकारी व्यवस्थाओं की पोल–खोल में व्यस्त हैं । ऐसी विषम परिस्थिति में जहाँ प्रत्येक सरल–सुशील इंसान किसी–न–किसी निकटस्थ सगे–संबंधी, बंधु–बांधवों के असामयिक परलोक गमन से व्यथित, दुखित हैं, हमें इस घटना के पुनरावलोकन एवं ऐतिहासिक संदर्भों पर दृष्टिपात करने एवं इसके फलाफल से अवगत होने में संकोच नहीं करना चाहिए ।

जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सन् 2020 के प्रारंभ में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोरोना वायरस के फैलाव को रेखांकित किया तब तक विश्व उन खतरों से अनजान था जो बैक्टीरिया से 20 गुने सूक्ष्म वायरस से फैल रहा था । 11 मार्च 2020 को जब इसे वैश्विक महामारी घोषित किया गया तब भी लोग–बाग इसके दूरगामी प्रभावों से अनभिज्ञ थे । लोग आशान्वित थे कि लॉकडाउन के सफल अवलम्बन से इस बीमारी से स्वयं को बचा सकते हैं । फलतः जोश–खरोश से ताली बजायी गयी, थाली पीटी गयी, दिये जलाए गए । परन्तु स्वास्थ्यकर्मियों के प्रति सम्मान भाव, राष्ट्रीय एकजुटता प्रदर्शित करने से इस महामारी के सेहत पर विशेष प्रभाव नहीं हुआ । धीरे–धीरे कोविड–19 पूरे भारतवर्ष में फैल गया । साथ ही विश्व के दो सौ से अधिक देशों में पहुँच कर वास्तविक वैश्विक महामारी के रूप में अपनी रौद्रता, भयावहता का प्रदर्शन करने लगा । पश्चिमी विकसित देशों में उच्च कोटि की चिकित्सीय व्यवस्था भी इस दानवीय संकट के समक्ष बौनी दिखने लगी । अन्य अविकसित देशों के समक्ष तो जीवन–मरण का अभूतपूर्व संकट खड़ा हो गया ।

लोग अस्पताल की ओर बेड की व्यवस्था में दौड़ने लगे तो असंख्य मरीज, उनके परिवार–बंधु ऑक्सीजन के सिलेण्डर की खोज में विक्षिप्त सदृश यहाँ–वहाँ भाग–दौड़ करने लगे । सच, मानों ईश्वर ने 21वीं सदी के इस वैज्ञानिक युग में मानवीय व्यवस्था की लचरता, लघुता, सीमितता, भ्रष्टता, शिथिलता को उजागर कर दिया । समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोग पक्ष–विपक्ष में बँटते–दिखे, वहीं स्वास्थ्य कर्मियों ने अपनी जान की बाजी लगा दी । मानवता पर घोर संकट का दृश्य उपस्थित हो गया । शायद हम पिछले संकटों, वैश्विक महामारी को भूल बैठे थे । लोग–बाग मौत के आँकड़ों में अपने रिश्ते–नाते को ढुँढ़ने में व्यस्त हो गये। बीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी महामारी–स्पेनिश फ्लू जिसके बारे में कहा जाता है कि तत्कालीन विश्व की एक तिहाई आबादी इससे ग्रसित हुई । अविभाजित भारत की कोई छः प्रतिशत आबादी (130–180 लाख) इस महामारी की शिकार बनी । यह महज इत्तेफाक नहीं कि मार्च 2020 में भारत में शुरु हुए लॉकडाउन शब्द को जन–जन प्रचारित करने का कारक, कोविड–19 आज भी विभिन्न रुपांतरों में जीवित रहते हुए अनगिनत मानव–जीवन को क्रूर काल का ग्रास बना रहा है । 4 मार्च 1918 को प्रथमतः दर्ज स्पेनिश फ्लू महामारी मार्च 1920 तक 5–10 करोड़ अर्थात् तत्कालीन विश्व की 2.5 से 5 प्रतिशत तक की आबादी को मौत के आगोश में सुला चुकी था । यहाँ यह ध्यातव्य है कि बीसवीं सदी के दो विश्व युद्धों प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) एवं द्वितीय विश्व युद्ध (1939–45) में क्रमशः करीब 1. 17 करोड़ एवं 6.0 करोड़ लोगों को अपनी जान गवानी पड़ी थी ।

कोविड–19 की दूसरी लहर के दौरान मौतों की भयावहता ने अनेक भारतीयों के विश्वास को डिगा दिया एवं इसे ईश्वरीय प्रकोप का प्रतिफल कहा जाने लगा । ठीक उसी तरह जैसे प्राचीन ग्रीक के लोग बीमारी को आध्यात्मिक, दैवीय उपज मानते थे, दुष्कर्मों को ईश्वरीय सजा कहते थे । एक तरफ 1889 ई. में फैले फ्लू जहाँ उजबेकिस्तान के 'बुखारा' से शुरु हुआ मगर इसे 'रशियन फ्लू' की संज्ञा दी गयी, वहाँ मार्च 1918 में अमेरिका से प्रारंभ हुए फ्लू को 'स्पेनिश फ्लू' कहा गया । वर्तमान में कोविड–19 के जन्म को लेकर एकमत सा भाव है कि चीन के 'वुहान' शहर की एक प्रयोगशाला इसकी उत्पत्ति का कारक बनी । फलतः अनेक राष्ट्रनेता इसे 'चायनीज वायरस' की संज्ञा देने से गुरेज नहीं करते ।

इसने राष्ट्र की जड़ें हिला के रख दी । अर्थव्यवस्था ऋणात्मक अंकों में गोते लगाने लगी । कल–कारखानों की चिमनियों ने धुँआ छोड़ना बंद कर दिया । फलतः मजदूर, दिहाड़ी श्रमिक औद्योगिक शहरों को छोड़ सड़कों पर आ गये । नंगे, पैदल, भयाकुल गरीब जनता का अपने नेताओं और सरकारी व्यवस्थाओं पर से विश्वास उठ गया । कोलाहल की स्थिति मच गयी । जहाँ सरकारी मशीनरी चरमराती व्यवस्था, अर्थव्यवस्था को संभालने में दिन–रात जुटी थी तो वहीं कुछ संकट के दौर में भी राजनीति, कूटनीति, आरोप–प्रत्यारोपों में अपना भविष्य तलाशने में लगे थे ।

निराशा के वातावरण में लोग खोने वालों की यादें, संजोये बैठे थे । शास्त्रीय गायन के पुरोधा पण्डित राजन मिश्रा हो या लोकसभा के युवा सांसद राजीव सातव, नदीम–श्रवण की जोड़ी से श्रवण राठौर हो या पत्रकारिता जगत से युवा पत्रकार रोहित सरदाना या बंगला फिल्म जगत से सौमित्र चटर्जी या हिंदी साहित्यिक जगत से कवि कुँवर

बेचैन हो या मंगलेश डबराल– अनेकों ऐसे नाम है जो कोविड–19 से ग्रस्त हुए एवं इसके कोपभाजन के शिकार हो इस जग को अलविदा कह गए । शायद पिछली महामारी से सीखना अब भी शेष था ।

वर्तमान महामारी में जहाँ तक लक्षणों का सवाल है तो इसमें गले में खराश, बुखार, स्वाद–हीनता, साँस लेने में तकलीफ, अनिद्रा प्रमुख चिंता के कारक रहे हैं वहीं करीब सौ वर्ष पूर्व स्पेनिश फ्लू के दौरान भी लोग चक्कर आना, अनिद्रा, सुनने एवं गंध में ह्रास, आँखों की रोशनी कम होना, धुँधलापन की शिकायत दर्ज करते थे । मैंने भी कोविड–19 (कोरोना वायरस डीजीज 2019 का संक्षिप्त रूप) के प्रथम संक्रमण दौर में प्रथम तीन दिन बिना सोये छत एवं आकाश को निहारते बिताये । वाकई अनिश्चितता की घड़ी में नास्तिक जन भी ईश्वरीय कृपा, सानिध्य के मोहताज हो जाते हैं । महामारी के समय औषधीय गुणों पर प्रभू की कृपा प्रभावी लगने लगती है । मैंने भी विपदा में एकान्तवास के दौरान उन सभी प्रातः वंदनीय गुरुजनों, देवगणों को याद किया जिनसे कृपा प्राप्त हो सकती थी ।

हाँ, कोविड–19 के इस दौर में 'क्वारंटाइन' शब्द बहुप्रचलित हुआ है जिसके अंतर्गत संक्रमणग्रस्त लोगों को परिवार–समाज के अन्य सदस्यों से पृथक रहना आवश्यक माना गया है ताकि वायरस–संक्रमण के फैलाव को सीमित किया जा सके । क्वारंटाइन शब्द की उत्पत्ति 15वीं सदी में इटली के वेनिस से हुई मानी जाती है जब वहाँ पड़ोस से आने वाले समुद्री जहाजों को चालीस दिनों के लिए लंगर डालना होता था तभी उन्हें जहाज से मुख्य भूमि पर उतरने की अनुमति दी जाती थी । स्वामी विवेकानंद भी क्वारंटाइन पर थे जब अमेरिका प्रवास हेतु समुद्री जहाज में बैठे । उनके दर्शन मद्रास के लोगों को समुद्र तट पर खड़े होकर दूर से करने पड़े थे । महामारी के दौर में इसकी अहमियत परिवार के अन्य सदस्यों की रोग्रस्त होने से बचाव के रूप बढ़ जाती है भले ही पृथकवास, एकान्तवास में कभी–कभी मानसिक अवसाद से दो–चार होना पड़े । दूसरी तरफ, यह एकान्तवास अध्यात्म की ओर भी प्रवृत करता है, ईश्वरीय शक्ति, सर्वोच्च सत्ता की सत्यता के करीब लाता है । कोरोनाकाल ने पुनः भारतीय परिवेश में योग की महत्ता, आयुर्वेद की उपादेयता, वैकल्पिक घरेलू चिकित्सा संबंधी अनुभवों से आत्मसात कराया है ।

भारतीय परिपेक्ष्य में विगत महामारी के दौर की बात की जाय तो वर्ष 1918 का समय भारतीय जवानों का विश्व युद्ध के लिए ब्रिटिश फौजों में भर्ती का काल था जिसमें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का सक्रिय सहयोग प्राप्त था । गाँधी जी जो अपने जीवन के 48 बसन्त देख चुके थे, इस स्पेनिश फ्लू के शिकार बने । गाँधी जी दक्षिण अफ्रिका से वापस इंडिया आकर चंपारण सत्याग्रह द्वारा लोकप्रिय नेतृत्वकर्त्ता बन गये थे । 1918 में गुजरात में मिल मजदूरों के न्यून वेतन को लेकर आंदोलन करने के साथ खेड़ा के किसान आंदोलन में भी सक्रिय थे । इस समय बॉम्बे प्रेसिडेन्सी में अकाल के हालात बन गए थे, पानी का संकट था । मवेशी बिना चारा के मर रहे थे । अनाज के दुगुने दाम हो गए थे । अक्टूबर, 1918 मे जब महामारी अपने चरम सीमा पर थी ब्रिटिश सरकार को गेहूँ का निर्यात रोकना पड़ा । लोग मालगाड़ी के डिब्बे से अनाज चुराने को बाध्य हो गए थे । गाँव से बम्बई शहर में बढ़ते पलायन ने हैजा को भी फैलाना शुरु कर दिया था । नदियाँ लाशों से पटी थीं । अंत्येष्टि हेतु लकड़ियों की

किल्लत थी । फिर भी इन सबके बीच गुलाम भारतीय उपनिवेश में अंग्रेजों से मुक्ति, पराधीनता की बेड़ियों को काट डालने की अदम्य ज्वाला धधक रही थी । इसी महामारी के दौर में 13 अप्रैल, 1919 को रॉलेट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में वैशाखी के पवित्र दिन में आयोजित सभा में निहत्थे लोगों पर ब्रिगेडियर जनरल डायर ने गोलियाँ चलवा दी जिसमें सैकड़ों निर्दोष भारतीय काल के गाल में समा गए । कवि श्रेष्ठ रविन्द्रनाथ टैगोर जिनको साहित्य के क्षेत्र में उनके 'काव्य' गीतांजली को प्रथम एशियाई के रूप में साहित्य का नोबेल पुरस्कार 1913 ई. में प्राप्त हुआ था, ने 1915 ई. में प्राप्त 'नाइटहुड' की उपाधि ब्रिटिश सरकार को 31 मई, 1919 को वापस कर दी। वर्ष 1919 में ही हिंदी जगत के मूर्धन्य कथाकार, उपन्यासकार धनपत राय अर्थात प्रेमचंद के 'सेवा सदन' नामक प्रथम चर्चित उपन्यास का प्रकाशन हुआ । प्रेमचंद ने अकाल, महामारी के दौर को सजीवता, सरलता से अपनी कथाओं में मार्मिक चित्रण किया है । वे तत्कालीन संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) के वासी थे जहाँ 20–30 लाख भारतीयों की जान इस फ्लू से गयी । प्रसिद्ध हिन्दी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने इस महामारी की वजह से अपनी पत्नी सहित अपने परिवार के अनेक लोगों को खोया । वे गंगा में उफनते मृत शरीरों को देखकर व्यथित थे । पल–भर में 22 वर्षीय इस युवा कवि के बिछुड़े परिवार ने उनकी अंतरात्मा को झकझोर डाला था । 1921 ई. में निबद्ध उनकी कविता 'भिक्षुक' आज भी हम–सबके जेहन में जीवित है–

वह आता–
दो टूक कलेजे को करता
पछताता पथ पर आता ।
पेट–पीठ दोनों मिलकर है एक
चल रहा लुकुटिया टेक
मुठ्ठी भर दाने को , भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी, झोली फैलाता.....
भूख से सूख होंठ जब जाते
दाता–भाग्य विधाता से क्या पाते
घूँट–आँसूओं के पीकर रह जाते
चाट रहे जुठी पत्तल वे
सभी सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए

(साभार उद्धृत)

सच तत्कालीन करुणाजनक स्थिति का चित्रण इससे बढ़कर और क्या हो सकता था ।

यद्यपि वर्तमान समय में भी कुछ अमानवीय, दुखदायी तस्वीरें इस महामारी के दौर में विश्व पटल पर उभरी पर आज के सूचना क्रांति युग में तेजी से फैलने वाले इस प्रकार के संक्रामक रोगों पर कुछ देर से ही सही अवरोधक खड़े किए गए, उपचारी कदम उठाए गये। फलतः इस बार की महामारी भले ही भयाक्रांत समाज में सिहरन पैदा कर दी है परन्तु इसकी विकरालता 1918 ई. के स्पेनिश फ्लू सी नहीं रही है । उस दौर में जब एंटी बॉडी, वैक्सीन आदि नहीं थे, चिकित्सकों, वैज्ञानिकों ने इस दौर में वो सब कुछ किया जो उस काल के लिए अप्रत्याशित था । आज कोरोना से बचाव हेतु एंटी बॉडी तैयार करने हेतु टीके उपलब्ध हो गये हैं । भारत ने भी अपने टीके ईजाद किए और अब तक 195 करोड़ से ऊपर ये डोज भारतीयों को लगाए जा चुके हैं । 'दो गज की दूरी बहुत है जरूरी', 'मास्क का इस्तेमाल ही कोरोना से बचाव', सोशल डिस्टेन्सिंग, सेनेटाईजर

का प्रयोग, हाथों की सफाई–धुलाई की सार्थकता से अब जन–जन परिचित हो चुका है । कोरोना काल में सरकारी मदद मुफ्त अनाज योजना से 1920 ई. जैसे हालात नहीं हुए जबकि विश्व जनसंख्या में चौगुनी वृद्धि हो गयी है । इस महामारी के शिकार लोगों के परिजनों को चार लाख रूपये मुआवजे की भी घोषणा की गयी है । बीमा कंपनियाँ भी राहत पहुँचा रही हैं । फलतः लोगों का पुनः अपने जीवन को पटरी पर लाने में मदद मिल सके ऐसी उम्मीद की जा सकती है । पर शायद उस तरह नहीं जब निवर्तमान अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के अप्रवासी जर्मन दादा को स्पेनिश फ्लू के दौरान असामयिक मौत पर बीमा कंपनी से प्राप्त राशि को उनकी दादी एवं पिता ने संपदा–निवेश किया जिसके प्रतिफल में ट्रम्प आज अकूत और अरबों डॉलरों के धनी माने जाते हैं।

आज जब भारत के कुछ लोग इस वैश्विक महामारी की तीसरी लहर (जनवरी 2022 से शुरु हुए) के इंतजार में हैं वही अनेक क्षेत्रों में गतिविधियाँ सामान्य स्थिति की ओर बढ़ रही हैं । अर्थव्यवस्था में सुधार के संकेत मिल रहे हैं पर 1920 ई. के दौर के समान जनसंख्या में अपार वृद्धि न हो तो अच्छा होगा अन्यथा भारत जैसे बहुआबादी (करीब 140 करोड़) वाले देश में लगातार कम पड़ रहे संसाधनों से ऊर्ध्वमुखी विकास की अपेक्षित गति शायद ही प्राप्त हो सकेगी । कोरोना काल में शैक्षणिक जगत की क्षति, जहाँ अनेक बच्चों में बिना परीक्षा दिये उत्तीर्णता प्राप्त करने का मलाल है वहीं औद्योगिक–श्रमजगत में कुछ नौकरी, रोजगार पाने में अक्षम लोगों को एवं अनेक रोजगार खोने एवं रोजगार से सिमटते अवसरों से अवसाद ग्रस्त होने से बचाने का भगीरथ प्रयास किए जाने की आवश्यकता मुँह बाये खड़ी है । कोरोना काल ने जहाँ कई समस्याओं को खड़ा किया है वहीं विकास के, विज्ञान के, सूचना प्रौद्योगिकी के नये द्वार खोले हैं, नये अवसर उपलब्ध कराएं हैं ।

इस बार की महामारी में विगत सदी की तुलना में मानवीय क्षति उतनी नहीं हुई है । अमेरिका, ब्राजील, भारत जैसे बड़े राष्ट्र ज्यादा प्रभावित हुए हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान ने इसके प्रभाव को टीकाकरण के माध्यम से काफी हद तक सीमित करने में सफलता पायी है । इस महामारी के कारणों में एक मानव के प्रकृति के साथ प्रतिकूल संबंध रहे हैं । 'अल निनो' एवं 'ला निना' प्रभाव, विश्व के तापमान में वृद्धि फ्लू वायरस फैलाव के अनुकूलन तत्व हो रहे हैं। अमेरिका के 'कमिशन ऑन ग्लोबल हेल्थ, रिस्क फ्रेमवर्क फॉर दि फ्यूचर (GHFR) ने अपने शोध प्रतिवेदन में 2016 ई. में ही आगामी सौ वर्षों के अंदर चार या इससे अधिक वैश्विक महामारी आने की संभावना बीस प्रतिशत तक बतायी थी जिसमें से एक अवश्यम्भावी रूप से फ्लू होना कहा गया था । इस तरह के वैज्ञानिक शोध हमें महामारी के प्रति सजग रहने को प्रेरित करते हैं । शुक्र है कि इस महामारी के आगमन के पूर्व से ही भारत सरकार ने स्वच्छता के प्रति व्यापक राष्ट्रीय अभियान चलाये रखा था । हमें ऐसे संक्रामक रोग को रोकने हेतु–निगरानी, रोक–थाम एवं आज्ञाकारी, सजग जनसहयोग– पर विशेष ध्यान केंद्रित करना होगा । किसी भी संक्रामक बीमारी पर प्रारंभ से ही निगरानी की जानी चाहिए एवं इसके प्रभावी रोकथाम हेतु कदम सजग एवं जनजागृति से उठाये जाने पर रोग की विभिषिका से बचा जा सकता है ।

हम सबने अपने लोगों को खोया है । कार्यालयीन युवा सहकर्मी खोये हैं । बच्चों ने अभिवावकों का साया खोया है । कई परिवार अनाथ

हो गये हैं । ऐसे संकट काल में हमें धैर्य नहीं खोना है। भयादोहन से बचना है । सही जानकारी उपलब्ध करानी है । अपेक्षित सेवा, सहयोग, सुरक्षा उपलब्ध करानी है । उत्तम चिकित्सीय प्रबंध करना है । इस कार्य में हरेक संस्था या सरकारी संस्थाओं के स्तुत्य प्रयासों में सहयोग देने में प्रबुद्ध जागरूक नागरिक की प्रतिबद्धता अपेक्षित है । किसी सामान्य बीमारी पर संबंधित रोगग्रस्त व्यक्ति या इलाजरत चिकित्सक विजय प्राप्त कर सकता है । परंतु वैश्विक महामारी से निबटने में समस्त समाज की सार्थक पहल, रोगनिरोधक उपयुक्त आचरण–व्यवहार, सम्मिलित सम्यक प्रयास अत्यावश्यक है अन्यथा इतिहास पुनः दोहराया जाता रहेगा ।

अंततोगत्वा उन सभी कोरोना योद्धाओं का आभार, जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए दूसरों की निस्वार्थ सेवा की, सहयोग दिया । इनमें मेरे श्रद्धेय अग्रज बंधु भी सम्मिलित हैं जिन्होंने इस बीमारी के संक्रमित होने पर मुझे स्तुत्य सहयोग दिया पर वे कालान्तर में खुद इसके मौत के शिकार बन गए । यहाँ पर उद्धर्णीय है कि प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक रोमां रोलां– जिन्होंने 1915 ई. में साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त किया था, स्पेनिश फ्लू के लक्षणों से ग्रस्त स्विट्जरलैंड के जेनेवा में होटल में पड़े थे एवं होटल के स्टाफ ने उनके कमरे में जाने से मना कर दिया था तो ऐसी विषम घड़ी में उनकी उम्रदराज माताजी ने उनकी देखभाल की थी । शायद ऐसी स्थिति से कई संक्रमित बंधु गुजरे होगें परन्तु ईश्वर ने किसी को अपना दूत बना भेजा होगा, उन सब देवदूतों को सादर नमन ।

गुडाकेश

कृष्ण मुरारी जयपुरियार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

'निद्रा' हमारे जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक ऐसी आवश्यकता है जिसकी संयमित मात्रा हमारे स्वस्थ जीवन के अपरिहार्य है क्योंकि इसकी आवश्यकता से अधिक या कम दोनों स्थिति में यह हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

विज्ञान के अनुसार जहाँ अनिद्रा मनुष्य को शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से बीमार बनाती है वहीं अतिनिद्रा उसे आलसी बनाते हुए उसके शरीर को कई बिमारियों का घर बना देती है। इसलिए यह कहा जाता है कि सामान्य तौर पर एक युवा को आठ घंटे की शांतिपूर्वक निद्रा आवश्यक है।

अतः सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि निद्रा है क्या? वास्तव में निद्रा वैसी स्थिति है जिसमें हमारी सभी ऐच्छिक क्रियाएँ रूक जाती हैं और मात्र शरीर के लिए तत्समय आवश्यक अनैच्छिक क्रियाएँ ही सतत् रूप से जारी रहती है। इससे एक बात और स्पष्ट होती है कि जब हम कोई भी ऐच्छिक क्रियाएँ नहीं कर रहे होते हैं तो यह वास्तव में एक निद्रा की स्थिति है परन्तु इस स्थिति का अर्थ है हमारी क्रियाओं पर हमारे मस्तिष्क का नियंत्रण नहीं होना। इसी कारण एक नवजात शिशु या एक बिमार व्यक्ति अधिकतर समय निद्रा की अवस्था में रहता है क्योंकि उसके ऐच्छिक क्रियाओं की जरूरत बहुत कम रहती है।

परन्तु सामान्य मनुष्य के लिए निद्रा अपने आप में एक अति आवश्यक स्थिति है जो उसके लिए प्रति दिन आवश्यक हो जाती है तो प्रश्न उठता है कि आखिर यह किसी के लिए आवश्यक क्यों है? वस्तुतः निद्रा की स्थिति में हमारा शरीर अपनी ऊर्जा की आवश्यकता को सीमित कर उसका उपयोग शरीर के सभी कोशिकाओं को एक बार फिर से तरोताजा करने में लगाता है ताकि जागृत अवस्था में हम अपनी आंतरिक ऊर्जा का भरपूर उपयोग कर सकें। अर्थात इसे सामान्य भाषा में कहें तो यह शरीर रूपी मशीन का रिपेयर एण्ड मेन्टेनेनस का समय होता है। परन्तु शरीर की यह तैयारी अलग–अलग व्यक्ति के लिए अलग अलग होती है। इसी कारण कोई कम निद्रा लेकर भी अधिक स्फुर्त दिखता जबकि अधिक निद्रा के बावजूद भी थका–थका दिखता है, और यह कई बातों पर निर्भर करता है यथा उसके जीवनचर्या, उसका आहार, योग साधना इत्यादि।

हमारी सनातनी परम्परा में ऐसे भी उदाहरण है जिन्होंने निद्रा पर विजय प्राप्त कर लिया है और ऐसे महान व्यक्ति को ही '**गुडाकेश**' की संज्ञा दी गयी है। ऐसे तो महादेव भगवान शिव को गुडाकेश कहा गया है परन्तु ग्रंथों के अनुसार रामायण में श्रीराम के भाई लक्ष्मणजी एवं महाभारत में अर्जुन को यह संज्ञा मिली थी। रामायण के अनुसार गुरू विश्वामित्र से राम और लक्ष्मण को यह विद्या प्राप्त हुई थी और इसी के कारण वे पूरे 14 वर्षों तक के वनवास में बिना निद्रा के पूरी तन्मयता से श्रीराम की सेवा की थी और इसी के कारण वे रावण पुत्र मेघनाथ का वध करने में सक्षम हुए। उसी प्रकार गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गुडाकेश कह कर संबोधित किया था क्यों कि उन्होंने अज्ञातवास के दौरान इस कठिन साधना

के बल पर कई दिव्यास्त्रों के अधिकारी बन पाए थे।

अब प्रश्न यह है कि क्या कोई व्यक्ति वास्तव में इतना सक्षम हो सकता है कि बिना निद्रा के अपनी ऊर्जा की खपत को इतना सीमित कर सके कि उसका शरीर पूर्ण रूप से उर्जा वान बना रह सके। इसका उदाहरण वर्त्तमान परिदृश्य में विशेष रूप से प्रशिक्षित कुछ सैनिक या ऐसे ही अन्य लोग हैं जो लगातार जगकर किसी विशेष लक्ष्य को पूरा करते है। हालांकि यह एक सामान्य गतिविधि नहीं होकर विशेष प्रकार के काम के लिए होता है और इसे निद्रा पर विजय नहीं माना जा सकता है। हाँ, योग साधना से हम अपने शरीर को काफी कुछ इस लायक बना सकते हैं फिर भी गुडाकेश की संज्ञा प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है।

योग की विधियों में से एक विधि 'योगनिद्रा' एक ऐसी विधि है जो बहुत हद तक आपके शरीर की निद्रा की आवश्यकता को पूरा कर सकता है और आप जागृत अवस्था में ही अपनी ऊर्जा की खपत को सिमित कर अपने शरीर को अधिक ऊर्जावान बना सकते हैं। इस प्रक्रिया में शरीर को इतना शिथिल किया जाता है कि सभी ऐच्छिक क्रियाएं स्वतः ही नगन्य हो जाती है। इस प्रक्रिया से आप निद्रा पर विजय तो नहीं परन्तु अपने निद्रा के समय को घटाकर अन्य कार्यों की अवधि बढ़ाकर उसे और अधिक ऊर्जा के साथ कर सकते है। ठीक उसी प्रकार दिन में कुछ अवधि के लिए ध्यान आदि भी आपके शरीर को यह फल प्रदान कर सकता है।

अर्थात योग साधना में कई ऐसी विधियाँ हैं जो आपके नींद की अवधि को आवश्यकतानुसार सीमित कर सकती है। हालांकि, निद्रा मनुष्य की नैसर्गिक आवश्यकता है, अतः इसे शून्य करने का विचार नहीं करना चाहिए परन्तु अधिक निद्रा भी उतना ही हानिकारक सिद्ध होती है जितना निद्रा का न आना।

योग के बारे में श्रीमदभगवद् गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः ।

न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥

अर्थात हे अर्जुन, योग न तो अधिक खाने वाले और एकदम नहीं खाने वाले से सिद्ध होता है और न अधिक सोने वाले या एकदम निद्रा नहीं लेने वाले से। अर्थात् ईश्वर को भी कर्म सन्यासी प्रिय हैं जो बिना फल की चिंता किए हुए अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करे और वो सभी कार्य करे जो उसके लिए उपयुक्त हैं। अतः गुडाकेश अर्थात निद्रा पर विजय का सही अर्थ है निद्रा आवश्यकता के अनुरूप स्वीकार करना। अतः जिन्होंने निद्रा को अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन में बाधा न बनने दिया वही सही अर्थों में 'गुडाकेश' है।

जनकवि नागार्जुन

वीरेन्द्र साहू
कनिष्ठ अनुवादक

जनकवि नागार्जुन का जन्म 30 जून 1911 ई. को ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन मधुबनी जिले के सतलखा नामक गाँव में हुआ था जो उनका ननिहाल था । वैसै उनका पैतृक गाँव दरभंगा जिले का तरौनी था । नागार्जुन का वास्तविक नाम बैद्यनाथ मिश्र था । बचपन में प्यार से लोग उन्हें ठक्कन मिसर बुलाया करते थे । बैद्यनाथ मिश्र और ठक्कन नाम के पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है । उनके पिता गोकुल मिश्र व माँ उमा देवी थी । उन्हें चार संताने हुई परन्तु सभी अकाल मृत्यु को प्राप्त हुई । संतान न जी पाने के कारण उनके पिता काफी दुःखी रहने लगे । अशिक्षित ब्राह्मण गोकुल मिश्र अपने आराध्य देव शंकर की आराधना में अति संलिप्त रहते कि शायद भोलेनाथ की कृपा से उन्हें संतान सुख की प्राप्ति हो जाए । फिर उन्होंने बाबा बैद्यनाथ धाम जो देवघर (झारखण्ड) में अवस्थित है, जाकर भगवान भोलेनाथ की पूजा–अर्चना की जिसके पश्चात् उन्हें ईश्वर की कृपा से पाँचवीं संतान की प्राप्ति हुई । चुंकि चार संताने पहले ही कुछ दिनों जीवित रह कर चल बसी थी इसलिए उनके मन में यह आशंका थी की शायद यह भी कुछ दिनों बाद हमें ठगकर चल बसेगा इसलिए उस बच्चे को सभी ठक्कन पुकारने लगे । कुछ समय के बाद इस शिशु का नामाकरण हुआ और चुंकि बाबा बैद्यनाथ की कृपा से ही उस बच्चे का जन्म हुआ था इसलिए उस बच्चे का नाम बैद्यनाथ मिश्र रखा गया ।

नागार्जुन जब छः वर्ष के थे तभी उनकी माता का देहान्त हो गया । गरीबी के कारण उनके पिता

उन्हें कंधों पर बिठा कर अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के यहाँ गाँव–गाँव ले जाया करते थे। इसी परिस्थिति में उन्हें घुमने की आदत पड़ी और इसी घुमन्तु स्वभाव ने उनके अन्दर छिपे एक रचनाकार को दुनिया से परिचय कराया जिसकी छाप उनकी अनुपम कीर्तियों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है ।

इस गरीबी की हालत में उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा मिथिलांचल के सम्पन्न वर्ग के प्रश्रय के सहारे लघु सिद्धांत कौमुदी और अमरकोश से आरंभ की । उनकी प्रारम्भिक शिक्षा सैद्धांतिक से ज्यादा व्यावहारिक थी। चुंकि इस लघु आयु में ही वे परिस्थितिवश मिथिलांचल के कई या लगभग सभी

गाँवों का भ्रमण कर चुके थे जिसका फल उनकी मैथिली रचनाओं में देखने को मिलता है । उन्होंने बनारस से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की जहाँ वे आर्य समाज के प्रभाव में आये । उन्होंने अपना पेशेवर जीवन शिक्षक के रूप में सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में प्रारंभ किया परन्तु अपने बाबा ठहरे घुमक्कड़ इसलिए उन्हें यह काम ज्यादा दिन तक रास न आया और बाद में वे बौद्ध दर्शन की ओर आकर्षित हुए । इसके बाद वे कोलकाता और दक्षिण भारत के रास्ते श्रीलंका गए जहाँ उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की जहाँ उनका नाम नागार्जुन पड़ा । 1937 ई. में वे भारत लौटे और साहित्य रचना के साथ–साथ राजनीति और आन्दोलनों में भी सक्रिय रहें । इस तरह अपने घुमक्कड़ जीवन से उन्होंने देश के साहित्य और राजनीति को भी जीया । स्वामी सहजानंद के संपर्क में आने के बाद वे बिहार के किसान आंदोलन में सक्रिय हो गये जिसके कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा । वे साहित्य में रचनाशीलता के साथ–साथ कलुषित राजनीति का सक्रिय प्रतिरोध करते थे । जय प्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति आन्दोलन के दौरान उन्हें जेल भी हुई और काफी समय वे जेल में रहे ।

उनकी पत्नी का नाम अपराजिता देवी था । घुमक्कड़ प्रवृत्ति के होने के कारण वे कभी गृहस्थ धर्म का पालन नहीं कर सके । 5 नवम्बर 1998 को वे अपने पीछे दो पुत्रियों एवं चार पुत्रों से भरे–पूरे परिवार के अलावा 3 कठ्ठे पुस्तैनी जमीन व उतनी ही वास भूमि छोड़ कर इस संसार से विदा हो गए परन्तु छोड़ गए अपने पीछे हिन्दी, बांग्ला, और मैथिली साहित्य की अनमोल धरोहर जो साहित्य प्रेमियों के लिए हमेशा प्रेरणास्त्रोत के रूप में विराजमान रहेगा ।

हिन्दी के जिन चार बड़े समकालीन कवियों की चर्चा अक्सर होती है उनमें नागार्जुन, शमशेर, त्रिलोचन और केदार नाथ अग्रवाल शामिल हैं। दरअसल प्रगतिशील धारा के इन कवियों को एक ऐसे दौर का कवि माना जाता है जब देश राजनीतिक उथल–पुथल के साथ तमाम जन आंदोलनों के दौर से गुजर रहा था। सत्तर और अस्सी के दशक में वामपंथी धारा के साथ–साथ एक ऐसा साहित्यिक–सांस्कृतिक उभार था जो सत्ता और निरंकुशता के ख़िलाफ खड़ा हुआ था और जिसने कविता को छायावाद, सौंदर्यवाद और रूमानियत के दायरे से बाहर निकाल कर समाज और आम आदमी से जोड़ने की कारगर कोशिश की थी। इस दौर के इन चारों समकालीन कवियों को साहित्य जगत में ये ऊँचाई मिली तो इसके पीछे उनके निजी जीवन और व्यक्तित्व का फक्कड़पन, सत्ता के निरंकुश चरित्र का विरोध, तानाशाही के खिलाफ एक रचनात्मक आंदोलन में उनकी अहम भूमिका और कविता के नए नए व्याकरण की तलाश जैसे पहलू शामिल हैं। नार्गाजुन इन साहित्यकारों में अपना एक विशेष स्थान रखते हैं ।

नागार्जुन को मैथिली में 'पत्रहीन नग्नगाछ' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । इसके साथ ही उन्हें अपनी साहित्य सेवा के लिए भारत भारती सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, राजेन्द्र शिखर सम्मान, साहित्य अकादमी की सर्वोच्च फेलोशिप तथा राहुल सांकृत्यायन सम्मान से नवाजा गया ।

उनकी प्रमुख उपन्यासों में 'रतिनाथ की चाची' (1948), 'बलचनमा' (1952), 'नयी पौध' (1953), 'बाबा बटेसरनाथ' (1954), 'वरुण के बेटे' (1957) आदि प्रमुख है । कविता संग्रह के रूप प्रकाशित उनकी कृतियों में 'युगधारा' (1953), 'सतरंगे पंखों वाली' (1959), 'प्यासी पथराई आँखें' (1962), 'तालाब की मछलियाँ' (1974), 'तुमने कहा था' (1980),

'हजार–हजार बाँहों वाली' (1980, 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने' (1986) प्रमुख हैं । मैथिली रचनाओं में 'चित्रा' (कविता संग्रह), 'पत्रहीन नग्न गाछ', 'पका है यह कहल', 'पारो''नवतुरिया' आदि चर्चित रचनाएँ है । उन्होंने बाल साहित्य में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसमें 'कथा मंजरी', 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम', 'विद्यापति की कहानियाँ' प्रमुख कृतियाँ हैं ।

उन्होंने हिंदी में नागार्जुन तो मैथिली में 'यात्री' नाम से रचनाओं का सृजन किया । अपने बनारस प्रवास के दौरान उन्होंने 'वैदेह' नाम से भी कविताएं लिखीं । उनकी पहली प्रकाशित रचना एक मैथिली कविता थी जो मिथिला नामक पत्रिका में छपी जिसका प्रकाशन दरभंगा से किया जाता था । उनकी पहली हिन्दी रचना 'राम के प्रति' नामक कविता थी जो 1934 में विश्वबंधु पत्रिका में प्रकाशित हुई । उन्होंने कविता के अलावा उपन्यास, कहानी यात्रा–वृतांत, संस्मरण, निबंध, रेखा–चित्र, व्यंग्य चित्र जैसी अनेकों विधाओं में साहित्य सृजन किया । मूल साहित्य लेखन के साथ–साथ उन्होंने कालिदास के मेघदूत का मुक्तछंद में अनुवाद, जयदेव के गीत गोविंद का भावानुवाद भी किया । उन्होंने 1944 से 1954 के बीच कई बांग्ला रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया । बांग्ला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरतनंद्र के कई उपन्यासों तथा कथाओं का भी हिन्दी अनुवाद नागार्जुन के द्वारा किया गया । साथ ही कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी के उपन्यास 'पृथ्वीवल्लभ' का गुजराती से हिंदी में अनुवाद किया गया । उन्होंने मैथिली और संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि विद्यापति के सौ गीतों का भी हिन्दी में भावानुवाद किया और 'पुरुष परीक्षा' की तेरह कहानियों का भी हिन्दी अनुवाद किया जिसे 'विद्यापति की कहानियाँ' नाम से प्रकाशित किया गया ।

नागार्जुन की कविताओं में जनसरोकार छलकता है । वे ऐसे ही जनकवि नहीं कहलाते है । उनकी साहित्य सेवा वास्तव में जनसेवा का माध्यम थी । उनकी कविता की इन पंक्तियों से जनता के प्रति उनका प्रेम और समर्पण प्रकट होता है:

जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ ?
जनकवि हूँ, साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ।

नागार्जुन की कविताओं से गरीबी, लाचारी, भूखमरी और अकाल के विभित्सता से जुझते लोगों की परिस्थियों का भी वर्णन देखने को मिलता है । उनके द्वारा लिखी गयी कविता 'अकाल और उसके बाद' इस बात का प्रमाण है:

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उन के पास
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद

अपने कविताओं के माध्यम से सत्ता की आँखों में आँखें डालकर सवाल करना उनकी पहचान थी । इसी कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा । आपातकाल के दौरान जमीन स्तर से और साहित्य के माध्यम से उन्होंने आपातकाल का पूरजोर विरोध किया और सरकार की कलई खोल के रख दी।

(1) माताओं पर, बहिनों पर, घोड़े दौड़ाए जाते हैं!
बच्चे, बूढ़े–बाप तक न छूटते सताए जाते हैं!
मार–पीट है, लूट–पाट है, तहस–नहस बरबादी है,
जोर–जुलम है, जेल–सेल है। वाह खूब आजादी है!

(2) खड़ी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट–सी शासन की बंदूक

उस हिटलरी गुमान पर सभी रहें है थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक

पारम्परिक काव्य धारा को नए काव्य के साथ पेश करने की क्षमता रखने वाले नागार्जुन इकलौते कवि हैं । काव्य रूपों को बेहतर तरीके नयी विधा का उपयोग करने में उन्हें कोई संकोच न था । वे छंद के प्रयोग से बचे नहीं अपितु अपनी कविताओं में उन्हें क्रांतिकारी तरीके से प्रयोग किया । प्रकृति के सुन्दर चित्रण मे भी उन्हें महारथ हासिल थी । 'बादल को घिरते देखा है' कविता की ये पंक्तियाँ उनके प्रकृति प्रेम का अद्वितीय उदाहरण है:

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है।
छोटे–छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

बाबा नागार्जुन विद्रोही मिजाज के साहित्यकार थे। वे प्रगतिशील विचारधारा के लेखक और कवि थे। उनकी रचनाओं में गाँव का ठेठपन और सत्ता का विरोध स्पष्ट झलकता है ।

उदय प्रकाश ने बाबा नागार्जुन के व्यक्तित्व–निर्माण एवं कृतित्व की व्यापक महत्ता को एक साथ संकेतित करते हुए एक ही महावाक्य में लिखा है कि खुद ही विचार करिये, जिस कवि ने बौद्ध दर्शन और मार्क्सवाद का गहन अध्ययन किया हो, राहुल सांकृत्यायन और आनंद कौसल्यायन जैसी प्रचंड मेधाओं का साथी रहा हो, जिसने प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा का ज्ञान पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत जैसी भाषाओं में महारत हासिल करके प्राप्त किया हो, जिस कवि ने हिंदी, मैथिली, बंगला और संस्कृत में लगभग एक जैसा वाग्वैदग्ध्य अर्जित किया हो, अपनी मूल प्रज्ञा और संज्ञान में जो तुलसी और कबीर की महान संत परंपरा के निकटस्थ हो, जिस रचनाकार ने 'बलचनमा' और 'वरुण के बेटे' जैसे उपन्यासों के द्वारा हिंदी में आंचलिक उपन्यास लेखन की नींव रखी हो जिसके चलते हिंदी कथा साहित्य को रेणु जैसी ऐतिहासिक प्रतिभा प्राप्त हुई हो, जिस कवि ने अपने आक्रांत निजी जीवन ही नहीं बल्कि अपने समूचे दिक् और काल की, राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों और व्यक्तित्व पर अपनी निर्भ्रांत कलम चलाई हो, (संस्कृत में) बीसवीं सदी के किसी आधुनिक राजनीतिक व्यक्तित्व (लेनिन) पर समूचा खण्डकाव्य रच डाला हो, जिसके हैंडलूम के सस्ते झोले में 'मेघदूतम् 'और 'एकॉनमिक पॉलिटिकल वीकली एक साथ रखे मिलते हों, जिसकी अंग्रेजी भी अपनी समकालीन कवियों और आलोचकों से बेहतर ही रही हो, जिसने रजनी पाम दत्त, नेहरु, बर्तोल्त ब्रेख्ट, निराला, लूशुन से लेकर विनोबा, मोरारजी, जय प्रकाश नारायण, केन्याता, एलिजाबेथ, आइजन हावर आदि पर स्मरणीय और अत्यंत लोकप्रिय कविताएँ लिखी हों–––– बीसवीं सदी की हिंदी कविता का प्रतिवनिधि बौद्धिक कवि वह है... ।"

निश्चित रूप से बाबा नागार्जुन जैसे साहित्यकार बिरले ही इस धरा पर जन्म लेते हैं । उनकी साहित्य सेवा वास्तव में जनसेवा है । उनकी कृतियों में आम जनमानस का जो चित्रण और सरोकार दिखता है वह अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है । भारतीय साहित्य की आकाशगंगा में नार्गाजुन एक ध्रुवतारा के समान दिप्त हैं जिसकी चमक और आभा हिन्दी साहित्य के भावी कर्णधारों को सर्वदा आलोकित करती रहेगी ।

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें **–नागार्जुन**

सच के बाद

जय प्रकाश मल्ल
सेवानिवृत्त
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सच के पीछे, सच के आगे,
मिथ्या का साम्राज्य बड़ा है।
यूं तो इसके पाँव नहीं है,
फिर भी पथ को रोक खड़ा है।।

जीवन बेबस छट पट करता,
गपबाजी भी थमी नहीं थी।
सांसें टूट रही थीं लेकिन,
प्राण वायु की कमी नहीं थी।।

साक्ष्य कहीं का कहीं पिरोकर,
सच ढक लेने का कौशल।
जो विरोध में आये, उनका
छिन्न भिन्न कर देना दल बल।।

भ्रामक उनकी गौरव गाथा,
कैसा कठिन समय है आया।
सच के बाद झूठ की माया,
मानवता पर काली छाया।।

कब तक खुद को छलना होगा,
अब तो इसे बदलना होगा।
श्रम को फिर से मान मिलेगा,
सच को सम्मुख लाना होगा।।

बच्चे और बंदूक

मनोज कुमार नं.-1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बच्चे बंदूक से नहीं डरते
न ही गोली बम या चाकू से
जब कोई प्यार नहीं करता
तब डरते हैं बच्चे ।
कई बार डर जाते हैं
बंदूक वाले
क्योंकि बच्चे करते हैं सवाल
अंकल यह क्या है ?
मुझे दो
मैं खेलूंगा
तब बंदूक वाले
टॉफी देकर बहलाते हैं
और छुपाते हैं बंदूक
उन्हें डर है कहीं
बच्चे छीन ना ले
खेलने के लिए बंदूक।

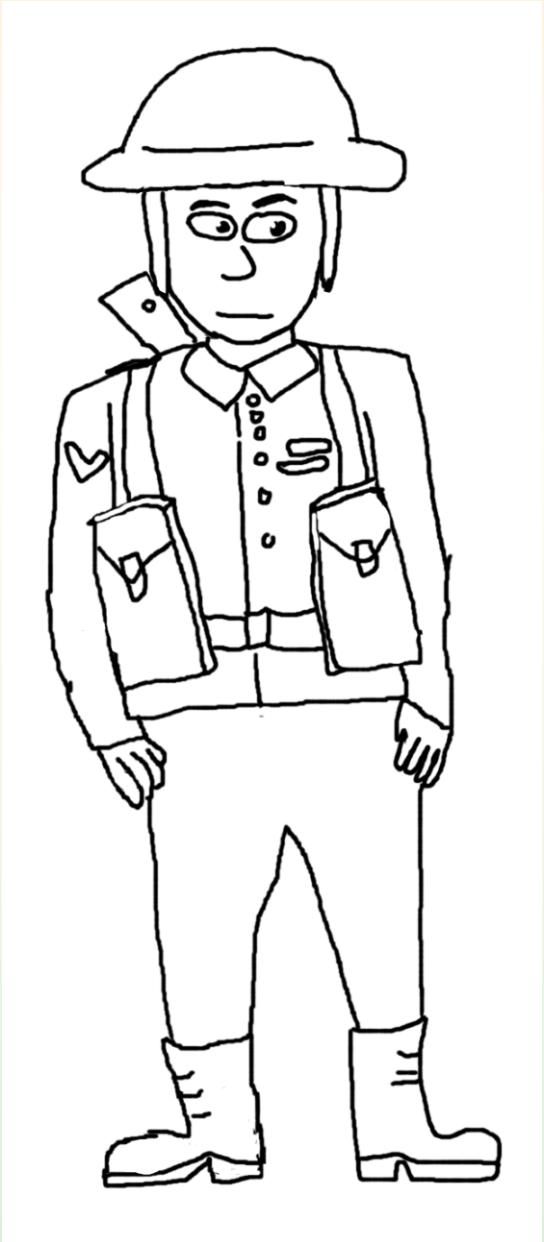

पर्यावरण संरक्षण और मानव जीवन

अभिषेक कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

पर्यावरण और मानव जीवन में घनिष्ठ संबंध है। दोनों प्रायः एक दूसरे पर निर्भर हैं, परंतु मानव जीवन पर्यावरण परिस्थितिकी तंत्र पर ज्यादा निर्भर है। पर्यावरण के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण के साथ तालमेल बनाए रखना आवश्यक है। हमें पेड़–पौधों, जीव–जन्तुओं और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना और उनका संरक्षण करना चाहिए। पर्यावरण हमारे जीवन का मूल आधार है। यह हमें सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए जल, खाने के लिए भोजन तथा रहने के लिए भूमि प्रदान करता है। वास्तव में पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, मानव और उसकी गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता है।

मानव क्रियाकलापों के कारण आज धरती का वातावरण लगातार दूषित होता जा रहा है और इसका पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों के जीवन पर बुरा असर पड़ रहा है। विकास और आधुनिकता की दौड़ में हम पर्यावरण को बहुत अधिक नुकसान पहुँचा रहे हैं जो उचित नहीं है। इसका ही परिणाम है कि हम प्रकृति से बहुत दूर होते जा रहे हैं। पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने का खामियाजा हम समय–समय पर भुगत भी रहे हैं। कभी बाढ़ आ जाती है तो कभी बादल फटते हैं, कहीं भू–जल स्तर में कमी आ रही है तो कहीं अत्याधिक गर्मी पड़ रही है। पेड़ों के कटने से हवा इतनी दूषित हो गई है कि

सांस संबंधी अनेक बीमारियाँ हो जा रही है। धरती पर मानव जीवन हमेशा हंसता, मुस्कुराता, खिलता रहे, इसके लिए पर्यावरण संरक्षण अति आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस का प्रमुख उद्देश्य है पर्यावरण की गुणवत्ता को बनाए रखना। वर्तमान समय में पर्यावरण की गुणवत्ता में बहुत ज्यादा गिरावट आई है। इसका प्रमुख कारण यह है कि जिस गति से पर्यावरण का दोहन हो रहा है उस अनुपात में पर्यावरण का संरक्षण नहीं हो पा रहा है। इसका दुष्परिणाम मानव जीवन पर सीधा देखने को मिल रहा है। वर्तमान समय में आर्थिक विकास के साथ–साथ पर्यावरण की प्राकृतिक, समाजिक और सांस्कृतिक गुणवत्ता में ह्रास, वायु–प्रदुषण, जल–प्रदुषण तथा मिट्टी–प्रदुषण में भी वृद्धि हुई है।

जलवायु पर्यावरण को नियंत्रित करने वाला प्रमुख कारक है क्योंकि जलवायु से प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी, जीव–जन्तु प्रभावित होते हैं। जलवायु मानव की मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं पर प्रभाव डालती है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए पर्यावरण और जीवित चीजों के बीच नियमित रूप से विभिन्न चक्र घटित होते रहते हैं। अगर किसी भी कारण से ये चक्र बिगड़ जाते हैं तो प्रकृति का भी संतुलन बिगड़ जाता है जो अंततः मानव जीवन को प्रभावित करता है।

जीवन के सम्यक विकास के लिए पर्यावरण का स्वच्छ रहना अति आवश्यक है। मानव ने अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण को बहुत हानि पहुंचाई है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अभी तक कोई भी प्रयास प्रभावी रूप से सफल नहीं हो पा रहा है। यह एक राष्ट्रीय–सामाजिक मुद्दा है। पर्यावरण संरक्षण सामूहिक सहयोग और प्रयासों से हीं संभव हो सकता है। आज की वर्तमान स्थिति में बढ़ती जनसंख्या, विलासितापूर्ण जीवन, प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन, औद्योगिकरण, शहरी चकाचौंध द्वारा उत्पन्न समस्याओं को रोकना मानव जाति का सामूहिक एवं प्रमुख मुद्दा होना चाहिए ताकि मानव जाति अपनी आने वाली पीढियों को एक सुरक्षित एवं स्वच्छ पर्यावरण का माहौल उपलब्ध करा सकें। अतः मानव जीवन को बचाने के लिए पर्यावरण की रक्षा करना अति आवश्यक है।

तीज

अनिल कुमार नं॰ 5
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

क्यों ना खुद को भूल जाऊं मैं।
क्यों ना तुझ पर लूट जाऊं मैं ।।

मुझ पर खुद को लुटाने के लिए,
मेरे लिए खुद को भूल जाने के लिए,
मेरी छोटी सी खुशियों के खातिर
अपनी हर खुशियां लुटाने के लिए,
क्यों न तुझ पर लूट जाऊं मैं।
क्यों ना खुद को भूल जाऊं मैं।।

मेरी दुनिया सजाने के लिए,
अपनी दुनिया भूल जाने के लिए,
एक लड़की होने का वजूद भूल
एक औरत बन जाने के लिए,
क्यों ना तुझ पर लूट जाऊं मैं।
क्यों ना खुद को भूल जाऊं मैं।।

खुशियों की नाज पर पली लड़की,
एक नई दुनिया में गुम हो जाने के लिए,
माँ के बिना न रह पाने वाली,
माँ बन कर खुद को मिट जाने के लिए
क्यों ना तुझ पर लूट जाऊं मैं।
क्यों ना खुद को भूल जाऊं मैं।।

बचपन फिर तुम लौट के आओ

श्रीमती दिब्या नाथ

देखो मेरे नेत्र सजल हैं,
तुम्हें याद करते प्रतिपल हैं।
वीणा की तारों में झंकृत,
मुझ मीरा की प्रेम गज़ल हैं।।

गुड्डे गुड़िया खेल खिलौने,
आँखों के वो सपने सलोने।
नानी की गोदी लगती थी,
जाड़ों के वो गर्म बिछौने।।

बचपन तेरा प्यारा चेहरा,
जिस पर रोक न कोई पहरा।
ओस की बूंदें फिर से पाओ,
बचपन फिर तुम लौट के आओ।।

चंदा मेरे मामा थे तब,
उन्हें देख कर खाती थी।
बचपन की उस स्वप्नपुरी में
बिल्ली मौसी डाँट लगाती।।

बचपन तेरी यादों का मेला,
ग्रीष्म ऋतु में आम का ठेला।
उसकी गुठली फिर से पाओ,
बचपन फिर तुम लौट के आओ।।

तुझे याद वो गइया का खूँटा,
देखकर जिसको बछड़ा रूठा।
बगिया में वो तितली प्यारी,
नीम के पेड़ का सुंदर झूला।।

बचपन, मेरे दिल की धड़कन,
तुझसे से रौशन मेरा ये मन।
उस जुगनू को फिर से लाओ,
बचपन फिर तुम लौट के आओ।।

क्यों तुझसे यूँ दूर गयी मैं,
अपना वो धन खो गयी मैं।
युवावस्था की सख्त कसौटी,
क्या थी, क्या अब हो गई मैं।।

देख मेरे अतृप्त नयन,
बचपन, मेरा तू प्रथम चयन।
वो अमृत फिर से लौटाओ,
बचपन फिर तुम लौट के आओ।।

देख मेरे अधीर हृदय को,
बचपन ने फिर थामा मुझको।
सम्मुख उसने लाया दर्पण,
मुझ से ही मिलवाया मुझको।।

दर्पण में यूँ छवि जो देखी,
ये तो मेरा ही अंगज है।
विस्मित देख मुझे वो बोला,
सखी ये तेरा नया जनम है।।

समय जो बीता बात बिसारो,
अपने नये रूप को जानो।
आँचल में तेरे बाल किशन हैं,
उनका खेल तेरा बचपन है।।

समझो उस मुस्कान की भाषा,
नहीं रहेगी कोई निराशा।
पुत्र जो तेरी गोद में आया ,
बचपन फिर लौट के आया।।

द्वारा– **सुभाष वर्मा**
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भाई

श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक काम करो तुम भाई
एक काम करूं मैं भाई
एक हथौड़ा.... तुम मारो
एक हथौड़ा मैं मारूं भाई
ये नफरत की मोटी दीवार
बीच हमारे कहाँ से आई
उस ओर से तोड़ो तुम दीवार
इस ओर से तोडूँ..... मैं भाई
एक दरवाजा तुम... खोलो
एक दरवाजा मैं खोलूं भाई
आंगन में... तुम भी आओ
आंगन में मैं भी आऊं भाई
अकेले दुनिया तुमने देखी
अकेले मैने भी देखी भाई
काम न आया कोई... कभी
बस याद आए तुम ही भाई
गैरों के दर पे झुकते.. सर तुम्हारे
गैरों के दर पे झुकता मैं भी भाई
टूट रहे हो तुम भीतर से
टूट रहा हूँ मैं भी भाई
रहें टूटकर अलग थलग हम
दुनिया चाहती यही है भाई
करो तुम बचपन की कुछ यादें
कुछ याद करूं.... मैं भी भाई

एक बात पते की सुन लो तुम
हाथ जोड़ विनती है तुमसे भाई
दिखती नहीं नफरत में अच्छाई
बस...कड़वा सत्य यही है भाई
दिख रही है जो गहरी खाई
है नहीं पर यह उतनी भाई
अरे थोड़ी मिट्टी तुम डालो
थोड़ी मिट्टी... मैं डालूं भाई
उस ओर से मिटाओ तुम लकीर
इस ओर से मिटाऊँ.... मैं भाई
ये नफरत की मोटी दीवार
बीच हमारे कहाँ से आई
उस ओर से तोड़ो तुम दीवार
इस ओर से तोडूँ..... मैं भाई !

मन

सुशील कुमार ठाकुर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृति हमें ज्ञान दे,
जीवन का वरदान दे ।
सीखने का मन है,
कितने यहाँ जन है ।
धरा तू कितनी निराली है,
सबकुछ तेरा आली है ।
तपतपाती धूप को,
तू तो सहने वाली है ।
बारिश का गम नहीं,
तू इतनी बलशाली है ।
कंपन के चरम पर,
तू संतुलन रखने वाली है ।
मन संतुलित, तन संतुलित,
बस यही गीत है,
जीवन का संगीत है ।

माँ जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी

शंकरा नंद झा
हिंदी अधिकारी

प्राचीन काल से ही पर्यटन की दृष्टि से बिहार देश का एक प्रमुख राज्य रहा है। यहाँ का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। जहाँ एक ओर यहाँ की भूमि ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण रहा है तथा राजगीर, नालंदा, पाटलीपुत्र जैसे स्थलों की ख्याति पूरे विश्व में फैली हुई है, वहीं दूसरी ओर यह राज्य धार्मिक दृष्टि से भी काफी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। बिहार विश्व के दो प्रमुख धर्मों (जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म) का उत्पत्ति स्थान भी रहा है। इन दो धर्मों के अलावा सिखों और सूफियों के अनुयायियों का भी यहाँ पर उत्कर्ष माना जाता है।

हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए भी बिहार काफी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। रामायण की सबसे प्रमुख मातृशक्ति अर्थात माँ जानकी का प्राकट्य बिहार में ही हुआ था। ऐसी मान्यता है कि माँ जानकी बिहार के सीतामढ़ी जिले के पुनौरा नामक स्थान पर धरती के अंदर से प्रकट हुई थीं।

पौराणिक मान्यता

वाल्मिकी रामायण के अनुसार एक बार मिथिला राज्य में बहुत ही भयंकर अकाल पड़ा। अनावृष्टि के कारण सभी जीव–जंतु परेशान थे। राज्य में खाद्यान्न की कमी होने लगी थी। पेड़–पौधे सुखने लगे थे। राज्य की ऐसी हालत देखकर मिथिला के राजा जनक बहुत परेशान हो गए। उन्होंने अपने मंत्रियों तथा ऋषि मुनियों के साथ विचार–विमर्श किया। उनके राज्य के प्रसिद्ध ऋषि मुनियों ने उन्हें यज्ञ करने तथा यज्ञ की समाप्ति पर

उर्विजा कुंड, जानकी स्थान, सीतामढ़ी (इंटरनेट से साभार)

स्वयं हल जोतने की सलाह दी। राजा जनक ने ऋषि के द्वारा दिए गए सुझाव के अनुरूप विशाल यज्ञ किया तथा यज्ञ की समाप्ति पर हल चलाए। राजा जनक जब हल चला रहे थे तो उनका हल किसी कठोर चीज से टकराया। जब उन्होंने झुक कर देखा तो उन्हें एक स्वर्ण कलश दिखाई पड़ा। स्वर्ण कलश को उन्होंने हाथों से उठाया और जब उसे खोल कर देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। स्वर्ण कलश के अंदर एक सुंदर सी दैवीय कन्या मुस्करा रही थी।

राजा जनक के यज्ञ से इंद्रदेव प्रसन्न हुए और जमकर वर्षा होने लगी। इसी वर्षा से बच्ची को बचाने के लिए वहाँ आनन–फानन में एक शेड बनवाया गया जिसे मड़ई कहते हैं। उस बच्ची का नाम सीता रखा गया और तभी से इस जगह को सीतामड़ई, फिर सीतामही और बाद में सीतामढ़ी कहा जाने लगा।

जनकपुर मंदिर (इंटरनेट से साभार)

राजा जनक को कोई संतान नहीं थी। अतः परमात्मा का वरदान समझकर राजा जनक ने उसे अपने पुत्री के रूप में अपना लिया। हल के नोक को सीत कहा जाता है। चुंकि वह हल के नोक से पृथवी से प्रकट हुई थी इसलिए उन्होंने उस कन्या का नाम सीता रखा। माँ सीता को जानकी, वैदेही, सिया आदि नामों से भी जाना जाता है। वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान राम की पत्नी देवी सीता धरती पर अवतरित हुई थीं। इसलिए इस तिथि को जानकी नवमी या सीता नवमी के नाम से जाना जाता है। मां लक्ष्मी का अवतार माता सीता भूमि रूप हैं, भूमि से उत्पन्न होने के कारण उन्हें भूमात्मजा और राजा जनक की पुत्री होने से उन्हें जानकी भी कहा जाता है।

पुनौरा धाम (मंदिर परिसर का पिछला हिस्सा) (इंटरनेट से साभार)

सीता जन्मभूमि का आध्यात्मिक और पौराणिक रूप से बड़ा महत्व है। सीतामढ़ी जिला मुख्यालय से 5 कि.मी. दूर पुनौरा नामक ग्राम में जमीन के भीतर से माता सीता प्रकट हुई थी। ये जगह फिलहाल बिहार टूरिज्म के रामायण सर्किट का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ आसपास कई ऐसी जगहें मौजूद हैं जिनका उल्लेख रामायण में मिलता है। माता सीता की जन्मस्थली होने से मिथिला भगवान श्रीराम का ससुराल और लव–कुश का ननिहाल है।

कैसे पहुँचें सीतामढ़ी

हवाई मार्ग द्वारा: हाल ही में दरभंगा हवाई अड्डे का उद्घाटन किया गया है। यह सीतामढ़ी आने हेतु निकटतम हवाई अड्डा है तथा सीतामढ़ी शहर से इसकी दूरी लगभग 75 किमी है। इसके अतिरिक्त जयप्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, पटना यहाँ से लगभग 140 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

यहाँ से बस या अन्य वाहन से सीतामढ़ी पहुँचा जा सकता है।

रेल मार्ग द्वारा: सीतामढ़ी रेलवे स्टेशन पूर्व मध्य रेल के रक्सौल–दरभंगा रेल मार्ग पर स्थित है। यद्यपि वर्तमान में यहाँ के लिए सीमित ट्रेनें ही हैं तथापि कोलकाता, मुंबई तथा दिल्ली से यह स्थान सीधे रेल मार्ग से जुड़ा है। रक्सौल, दरभंगा या फिर मुजफ्फरपुर रेलवे स्टेशन से भी यहां सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। पटना रेलवे स्टेशन से भी यहाँ बस या अन्य वाहन से पहुंचा जा सकता है।

सड़क मार्ग द्वारा: सड़क मार्ग से भी यह शहर अच्छी तरह जुड़ा हुआ है और बिहार के प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग से भी यहाँ आसानी से पहुंचा जा सकता है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 77 इसे मुजफ्फरपुर तथा पटना से जोड़ती है जबकि राष्ट्रीय राजमार्ग 104 इसे राज्य के अन्य शहरों के साथ जोड़ती है।

सीतामढ़ी के आस–पास अन्य दर्शनीय स्थान:

यद्यपि पुनौरा जानकी मंदिर, जो कि माँ जानकी का प्राकट्य स्थली है, जिले का सबसे प्रमुख पर्यटन स्थान है। परंतु इसके अतिरिक्त यहाँ के आस–पास कई अन्य स्थान भी हैं जो पर्यटन एवं धार्मिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण हैं, यथा:

1. **जानकी मंदिर:** यह मंदिर रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड से लगभग 1.5 किमी दूर है । यहाँ माँ जानकी का भव्य मंदिर बना हुआ है। मंदिर के दक्षिण में जानकी–कुंड बना हुआ है।

2. **जनकपुर:** भारतीय सीमा से कुछ ही किलोमीटर दूर नेपाल में स्थित जनकपुर शहर राजा जनक की राजधानी थी। यहाँ पर रामायण तथा माता जानकी से जुड़े कई महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अब भी उपलब्ध हैं।

3. **देकुली (या ढकुली):** यह सीतामढ़ी शहर के पश्चिम में 19 किलोमीटर दूरी पर है । यहां एक प्राचीन शिव मंदिर स्थित है। शिवरात्रि की पूर्व संध्या पर हर साल एक बड़ा मेला होता है। कुछ किंवदंतियों के अनुसार ऐसी मान्यता है कि पांच पांडवों की पत्नी द्रौपदी का जन्म यहीं हुआ था। अब यह स्थान शिवहर जिले में पड़ता है।

4. **हलेश्वर स्थान:** यह सीतामढ़ी से 3 किमी उत्तर–पश्चिम में है। मिथक के अनुसार, राजा विदेह ने पुत्र यशती यज्ञ के अवसर पर भगवान शिव के एक मंदिर की स्थापना की थी। उनके मंदिर का नाम हलेश्वरनाथ मंदिर रखा गया था।

5. **पंथ–पाकर:** यह सीतामढ़ी के उत्तर–पूर्व में 8 किमी दुरी पर है। ऐसा कहा जाता है कि सीता को उसके विवाह के बाद इस मार्ग से अयोध्या के लिए एक पालकी में ले जाया गया था। एक पुराना बरगद का पेड़ अभी भी खड़ा है जिसके नीचे सीता जी ने विश्राम किया था ।

6. **बगही मठ:** सीतामढ़ी के उत्तर–पश्चिम में करीब 7 किमी दुरी पर बागही गांव में एक बड़ा हिंदू मठ है जिसमें 108 कमरे हैं। पूजा और यज्ञ करने के लिए यह एक प्रसिद्ध जगह है।

7. **पुपरी:** यहाँ एक प्रसिद्ध बाबा नागेश्वरनाथ (भगवान शिव) मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान शिव खुद नागेश्वर नाथ महादेव के रूप में प्रकट हुए थे।

8. **ससौला सभा:** आजादी के एक वर्ष बाद से ही सौराठ सभा के तर्ज पर सीतामढ़ी जिले के ससौला ग्राम में प्रतिवर्ष एक विशाल सभा का आयोजन किया जाता था जिसमें विवाह योग्य मैथिल ब्राह्मण अपने स्वजनों के साथ उपस्थित होते थे तथा वहाँ आए कन्याओं के पिता अपने पुत्रियों हेतु योग्य वर चुनते थे। इस सभा में हजारों की तादाद में लोग

जानकी मंदिर पुनौरा स्थान (मुख्य मंदिर)

पहुँचते थे। वर की शिक्षा–दीक्षा, आचार–व्यवहार, रोजगार–व्यापार आदि से संतुष्ट होने के पश्चात विवाह तय किया जाता है। परंतु विवाह के लिए पंजीकार की अनुमति आवश्यक होती है। वर पक्ष तथा कन्या पक्ष के पैतृक परिवार के सात पुश्तों और मातृक पक्ष के पाँच पुश्तों में प्रत्यक्ष रक्त सम्बन्ध नहीं होने पर ही पंजीकारों के द्वारा विवाह की मान्यता दी जाती है तथा ऐसे अधिकार निर्णय को एक तार के पत्ते पर मिथिलाक्षर में लाल स्याही से लिखवाया जाता है जिसे सिद्धान्त कहा जाता है। यह परंपरा आज भी मैथिल ब्राह्मणों में कायम है। इस समूचे संसार में शायद मैथिलों का यह वैवाहिक परंपरा सर्वोत्तम माना जाता है क्योंकि अधिकार निर्णय की अनूठी रीति को बाद में विभिन्न वैज्ञानिकों ने भी अपने–अपने ढंग से समुचित करार दिया है। आज भी राज्य के विभिन्न जिलों से आए लोग कौतुहलवश ससौला गाछी का भ्रमण करते हैं तथा विवाह तय करने के पौराणिक रीति को जानते– समझते हैं। बिहार के माननीय मुख्यमंत्री के दहेजमुक्त विवाह की संकल्पना के आलोक में एक बार पुनः इस सभा को पुनस्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

मिथिला के इस प्राचीन भाग में आपको बिहार की एक अलग ही छवि देखने को मिलती है। यहाँ की भाषा–संस्कृति और सीमावर्ती क्षेत्र का शांतिपूर्ण इलाका आपको आश्चर्यचकित कर सकता है। अगर आप पौराणिक स्थलों की यात्रा करने के शौकीन हैं तो आप पुनौराधाम की यात्रा जरूर करें। सीतामढ़ी जिले का एक बहुत बड़ा भाग नेपाल की सीमा से जुड़ा हुआ है। नेपाल के साथ इस जिले का रोटी–बेटी का संबंध रहा है और यहाँ के लोगों के लिए नेपाल कभी भी एक अलग देश जैसा नहीं रहा है। यहाँ आप भारत–नेपाल दोनों देशों के सीमा क्षेत्रों में बसी आबादी के जीवनशैली को निकट से देख सकते हैं।

अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सीतामढ़ी बिहार के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों में से एक है। जिस प्रकार अयोध्या भगवान श्रीराम की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है उसी प्रकार सीतामढ़ी भी माता जानकी के प्राकट्य स्थली के रुप में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। हाल के वर्षों में इसे रामायण सर्किट से भी जोड़ दिया गया है तथा इस स्थल का विकास तेजी से किया जा रहा है।

(यह मेरी स्वरचित एवं अप्रकाशित रचना है। छायाचित्र एवं तथ्यों हेतु इंटरनेट का सहारा लिया गया है।)

माँ

ललन कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

संतान की पीड़ा में
जो छुपकर आसूँ बहाए
वह होती है माँ ।

बच्चों की प्राण रक्षा के लिए
जो मौत से ना घबराए
वह होती है माँ ।

खुद भूखी रह मालिक के घर से
बची हुई कलेवा लाए
वह होती है माँ ।

लाख कष्ट दे संतान फिर भी उनके लिए
जो चिलचिलाती धूप में खुद को जलाए
वह होती है माँ ।

यूँ तो पिता परिवार का बट वृक्ष होता है
फिर भी गम के आसूँ पीकर
जो पिता के कमी को पूरा कर जाए
वह होती है माँ ।

दाई की तरह कपड़े–बरतन धोकर
रसोई में जो स्वादिष्ट खाना पकाए
वह होती है माँ ।

खुद की संतान की गलती पर भी
जो पूरी दुनिया से लड़ जाए
वह होती है माँ ।

मैं पेड़ हूँ

बीरेन्द्र कुमार नं–4
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सोचो मैं कौन हूँ,
समझो मैं कौन हूँ।
सड़कों और नहरों के किनारे,
पर्वत और पहाड़ो की वादियों में,
हर जगह मैं ही मैं हूँ।
हर बाग में मै हूँ,
हर काम में साथ हूँ।
बचपन से बुढ़ापे तक,
मैं ही एक अनमोल सखा हूँ।

जब तुम थक जाते हो,
तन–बदन जल जाता है,
मैं ही तुम्हे छाँव देता हूँ,
जलती गर्मी में ठंडक देता हूँ,
शुद्ध हवा का झोका लाता हूँ।

ना मैं घूमता हूँ,
ना बोलता हूँ,
बस स्थिर सा रहता हूँ।
कभी–कभी कुछ भाग हिलाकर
जीवित रहने का आभास दिलाता हूँ।

पतझड़ में भी फूल खिलाकर,
मौसम को रंगीन बनाकर,
दिल के हर जख्म भुलाकर,
सदैव सेवा का भाव रखता हूँ।

कहीं से भी आओगे,
मुझको वही खड़ा पाओगे,
अपनी राह जब भूलोगे
तब मेरा ही सहारा लोगे।

मुझ पर भी तुम ध्यान दो,
मेरे भाईयों को सम्मान दो।
कभी सहारा तो,
कभी खाद और पानी दो।
अपने घर–आँगन में,
तुम हमको स्थान दो।

मैंने क्या नहीं दिया तुमको,
खिलौना, छड़ी, फर्नीचर,
पौष्टिक आहार दिया तुमको।
तुम्हारे घर के हर कोने को,
मैने ही श्रृंगार किया।

ईमानदारी

रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दूर इस सभ्य शहर की रंगीनियों से,
बर्बादी और निर्जनता के प्रतीक बने,
वीरान खंडहर के समीप से गुजरते, मेरे पाँव,
रुक गए ठिठककर ।
झकझोर गई मुझे वह घुटी घुटी सी करुण क्रन्दन की आवाज, मेरे कानों से टकराकर ।
और ले गया मुझे, मेरे भीतर का इंसान,
उस गठरीनुमा चीज के पास,
जो सजीव जान पड़ रही थी !
परित्यक्त, जीर्ण–शीर्ण, श्री–हीन
और तार–तार कपड़ों में
लिपटे उस अस्थि–पंजर में,
क्यों प्रतिक्षारत था मन,
क्यों शेष थे प्राण,
मैं था इस पर हैरान !
उतर आई उसकी पीड़ा मेरे तन में ,
नैनों से आकर ।
कांप उठे मेरे शोकाकुल अधर !
कौन हो माँ, माँ कौन हो तुम?
लड़ परे असीम पीड़ा से उसके काँपते अधर,
और फुट पड़े स्वर!
मैं ईमानदारी हूँ...
हाँ बेटे मत करो आश्चर्य,
संभालो अपना धैर्य !
मैं वह भोली माँ हूँ, जो नहीं मांगती तुमसे,
तुम्हें कोख में नौ महीने रखने, जनने
और अपनी ममता का मूल्य ।
मैं हवा हूँ, जो बगैर मूल्य लिये
फैल जाती है सृष्टि के हर रिक्त स्थान में
और बचे रहते हैं तुम्हारे प्राण !
मैं वह पेड़ हूँ, जो खड़ा रहता है,
कट जाता है, अपने फर्ज पर,
बगैर किसी मूल्य के ।
मैं ही हूँ वह नदी जो
बस बहती जाती है,
सींचने हेतु जीवन को
अनवरत, सूख जाने तक,
किसी प्रतिदान के बगैर ।
यह धरती जो सह लेती है हँसकर,
अपनी छाती पे हल ।
यह आसमान जो लुटाता है धूप,
बरसाता है जल।
बंधा अपने फर्ज से प्रकृति का हर कण,
जो कभी नहीं कहते तुमसे,
कि करो मुझे कुछ अर्पण ।

हाँ ! वह मैं ही हूँ!
मैं ईमानदारी हूँ !
जिसे नसीब नही आज,
किसी घर का एक कोना ।
जहाँ सांस ले सकूँ मैं,
जहाँ बिछ सके मेरा बिछौना ।
हा विधाता !
हा विधाता !
क्यों नहीं हर लेते मेरे प्राण,
जब यहाँ हर आत्मा है निष्प्राण !
लगा, मुझमें रुक गया
रक्त का संचार,
हाँ, पर जी उठा था मुझमें
प्रकाश का संसार ।
मेरे कदमों ने लिया थरथराने का नाम,
पर जाग गया था मैं,
मैंने लिया उन्हें थाम ।
पर गिर ही गए मेरे आँसू ईमानदारी के अधरों पर,
और लौट आये जैसे प्राण, जीवन के खंडहर पर।
हार गया मुझमें स्वार्थ रूपी भक्षक,
जीत कर मुस्काया कर्त्तव्य रूपी रक्षक ।
काँपती उँगलियों ने थामी मेरी उँगलियाँ
मिट गई दूरियाँ, ईमानदारी और मेरे दरम्यां ।
और बोल उठे मेरे अधर,
नहीं माँ !
नहीं माँ!
तू नहीं बेघर !
जिस ईमानदारी में लिपटी है प्रकृति,
वह नहीं हो सकती बेघर।
चल माँ, चल अपने घर !
चल माँ, चल अपने घर !

बिहार कॉरपोरेट टी20 क्रिकेट लीग 2022 का विजेता : सिविल ऑडिट

बिहार कॉरपोरेट टी20 क्रिकेट लीग 2022 का आयोजन ऊर्जा स्टेडियम, पटना में 3 मई से 8 मई के बीच किया गया या। इस लीग में कुल 06 टीम क्रमशः सिविल ऑडिट, ऑफिसर्स ग्रूप, सर्वोदय ग्रुप, बिहार प्रशासनिक सेवा संघ(बासा), बिहार राज्य पॉवर होल्डिंग कंपनी लिमटेड (बीएसपीएचसीएल) तथा पीपीएसए ने भाग लिया। इस क्रिकेट लीग का उद्घाटन 03 मई, 2022 को, मुख्य अतिथि, प्रत्यय अमृत, प्रधान सचिव, पथ निर्माण एवं स्वास्थ्य विभाग, बिहार सरकार के द्वारा किया गया था।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना कार्यालय की क्रिकेट टीम सिविल ऑडिट ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बिहार कॉरपोरेट टी20 क्रिकेट लीग 2022 का खिताब अपने नाम किया । सिविल ऑडिट टीम ने अपना पहला मैच 05 मई को बासा टीम से खेला जिसमें बासा की टीम ने पहले बैटिंग करते हुए 6 विकेट खोकर 101 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए सिविल ऑडिट की टीम ने 4 विकेट खोकर 103 रन बनाए तथा 6 विकेट से मैच जीत लिया । इस मैच के हीरो सचिन प्रसाद रहे जिन्होंने 21 रन बनाए तथा 2 विकेट भी लिए।

सिविल ऑडिट टीम ने अपना दूसरा मुकाबला 06 मई को पीपीएसए टीम से खेला। पहले बैटिंग करते हुए सिविल ऑडिट ने 2 विकट को खोकर 212 बनाए जिसमें अखिलेश शुक्ला ने 88 रन तथा शेषदीप पात्रा ने 84 रनों का योगदान दिया । लक्ष्य का पीछा करने उतरी पीपीएसए की टीम सिर्फ 32 रन ही बना सकी और इस प्रकार सिविल ऑडिट टीम ने 186 रन के विशाल अंतर से यह मैच जीत कर सेमीफाइनल में अपना स्थान पक्का कर लिया। शब्बीर हुसैन ने इस मैच में 4 विकेट अपने नाम किये थे ।

सेमीफाइनल मुकाबला 07 मई को सिविल ऑडिट तथा ऑफिसर्स ग्रुप के बीच खेला गया। ऑफिसर्स ग्रुप ने पहले बैटिंग करते हुए 132 रन बनाए। शब्बीर हुसैन के 51 रनों की पारी के बदौलत सिविल ऑडिट की टीम ने 7 विकेट के नुकसान पर 134 रन बनाए तथा 3 विकेट से मैच जीत कर फाइनल में प्रवेश किया ।

बिहार कॉरपोरेट टी20 क्रिकेट लीग 2022 का फाइनल मैच सिविल ऑडिट तथा बीएसपीएचसीएल के बीच खेला गया । बीएसपीएचसीएल ने पहले बैटिंग करते हुए 8 विकेट खोकर 126 रन बनाए। सिविल ऑडिट की तरफ से राजेश कुमार राना ने 3 विकेट लिया। शेषदीप पात्रा के 52 तथा अश्वनी कुमार सिंह के 45 रनों के बदौलत सिविल ऑडिट ने सिर्फ 18.4 ओवर में ही 3 विकेट खोकर 127 रन बना लिए। इस प्रकार से बीएसपीएचसीएल को 7 विकेट से हराकर बिहार कॉरपोरेट टी20 क्रिकेट लीग 2022 का खिताब अपने नाम कर लिया। शेषदीप पात्रा को शानदार प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया।

मुख्य अतिथि शाहनबाज हुसैन, तत्कालीन उद्योग मंत्री, बिहार सरकार ने विजेता टीम को ट्रॉफी तथा रू. 100000/– का चेक प्रदान किया। उप विजेता टीम बीएसपीएचसीएल को रू. 50000/– का चेक प्रदान किया गया। सिविल ऑडिट टीम के शेषदीप पात्रा को लीग का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज चुना गया। टीम के प्रतिभावन खिलाड़ियों ने अपने बेहतरीन प्रदर्शन और खेल भावना का परिचय देते हुए हमारे कार्यालय को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया है । इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए 'प्रहरी परिवार' टीम के समस्त खिलाड़ियों तथा टीम को बधाई देता है।

(सौजन्य– मनोरंजन क्लब एवं प्रहरी परिवार)

बच्चों की चित्रकारी

श्रेयांस राज
वर्ग–3
द्वारा मनोज कुमार नं.–1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वप्निल शाश्वत
सुपुत्री श्री विकास कुमार नं–1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बच्चों की चित्रकारी

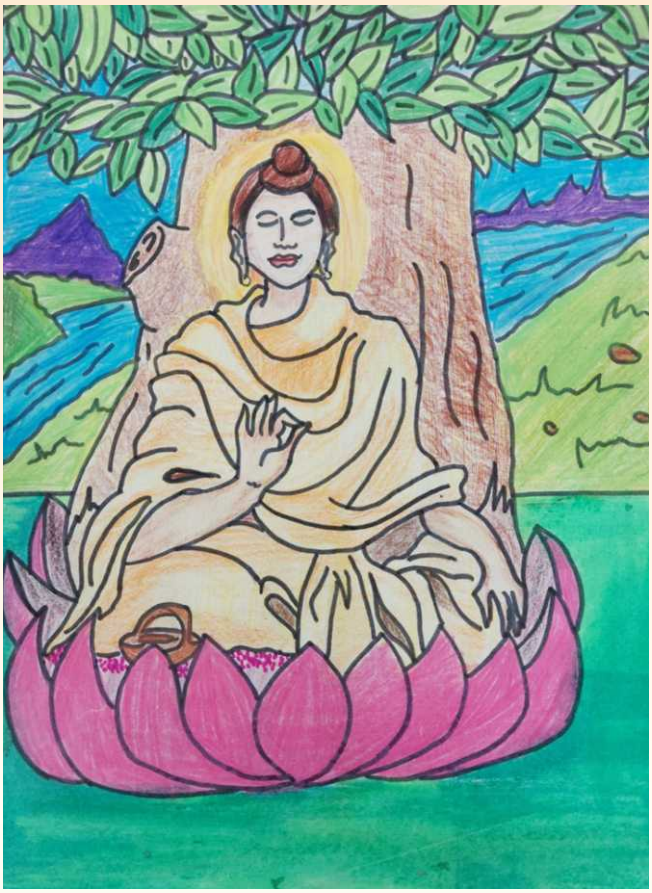

पलक श्रीवास्तव
पिता– श्री विनय कुमार श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अमोलिका गुप्ता
पिता– श्री विजय प्रकाश गुप्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

गज़ल

अताउल्ला हुसैन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

रात तो थी स्याह जो उल्फत की बात थी
चेहरे थे पर सफेद गोया[1] चाँदनी रात थी

कह के तो तू चला गया, 'जा आज़ाद है'
बंधा था तेरी बातों से जो हवालात थी

अब सूख गया गुल ये डाली ये शजर[2]
रूखसत[3] तू हुआ था तो बरसात थी

वो दोस्त था दुशमन था या था कोई और
खेलने को जो शै[4] मिली वो जज्बात[5] थी

बच्चे हुए जवान तो ये भी सबक़ दे गए
'बुढ़ापे का सहारा' किताबों की बात थी

'हुसैन' जरा अदल[6] की आवाज रख तू पस्त[7]
शाम क़ातिल ओ मुंसिफ़[8] की मुलाक़ात थी

1. मानो / जैसे
2. पेड़
3. विदा / जुदा
4. वस्तु
5. भावना
6. इंसाफ
7. नीचा / धीमा
8. इंसाफ करने वाला

हमारी बिटिया रानी

विजय कुमार ठाकुर
लेखापरीक्षक

जब आती हो घर में तुम,
चारों तरफ खुशियाँ लाती हो तुम,
लक्ष्मी का एहसास दिलाती,
ऐसी होती है बिटिया रानी।

घर आँगन की शोभा बढ़ाती,
तेरी मुस्कान है सबको भाती,
पापा की हो प्यारी तुम,
सबकी राजदुलारी तुम।

बहुत ही होता है अफसोस,
जब कुछ लोग नहीं समझते।
घर आने से पहले रोक देते हैं,
दिल दहल जाता है ऐसी हरकतों से।

हर खुशियाँ लूटाती हो तुम,
हर भाई की प्यारी बहना।
तेरे तो है रूप अनेक यहाँ।
तेरे बिना है अधूरा, राखी–भैया दूज।

हिम्मत और हौसला है तुझमें,
अवसर मिलने पर आगे बढ़ती
कदम–से–कदम मिलाकर चलती,
सबका रखती तुम ख्याल।

कुछ गलत हरकतों की वजह से,
आती है जब बाधा जीवन में।
मुँह तोड़ जवाब देकर तुम,
हमेशा हिम्मत से आगे बढ़ती।

तुम पर है नाज सभी को,
आशा और विश्वास है सभी को,
सेवा भाव से भरी हो तुम,
देश एवं समाज का गर्व हो तुम।

हम पेड़ जरूर लगाएंगे

गोपाल कुमार
लेखापरीक्षक

हम पेड़ नहीं लगाएंगे
आलू–गोभी टमाटर सब खाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
आम नारंगी संतरें सब हैं पसंद, चुन–चुन कर खाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
केला है फल अच्छा, उसके पत्तों पर भंडारा भी करवाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
लम्बी सड़क पर कड़ी धूप देख, गमछा बिछाएंगे, आराम भी फरमाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
गांवों को करेंगे शहर, पूरा महानगर भी बसाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
पर्यावरण दिवस पर तुम्हारे साथ होंगे खड़े, फोटो भी खिचवाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
फेसबुक ही नहीं, इन्स्टा भी है पंसद, सब पर स्टेट्स लगाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
तुम्हारें हाथों को तोड़ बल्ला बनाएंगे, छक्का भी लगाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
कभी तुमको दीया दिखाएंगे, अगरबत्ती भी सुंघाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
तुम जलती रहो, हम चैन से सो जाएंगे।
पर पेड़ नहीं लगाएंगे।
आंखें बंद रहेगी कब तक, कभी तो जग ही जाएंगे।
फिर पेड़ ही पेड़ लगाएंगे, पेड़ ही पेड़ लगाएंगे।
सबके जीवन में खुशहाली जाएंगे।
हम पेड़ जरूर लगाएंगे।
हम पेड़ जरूर लगाएंगे।

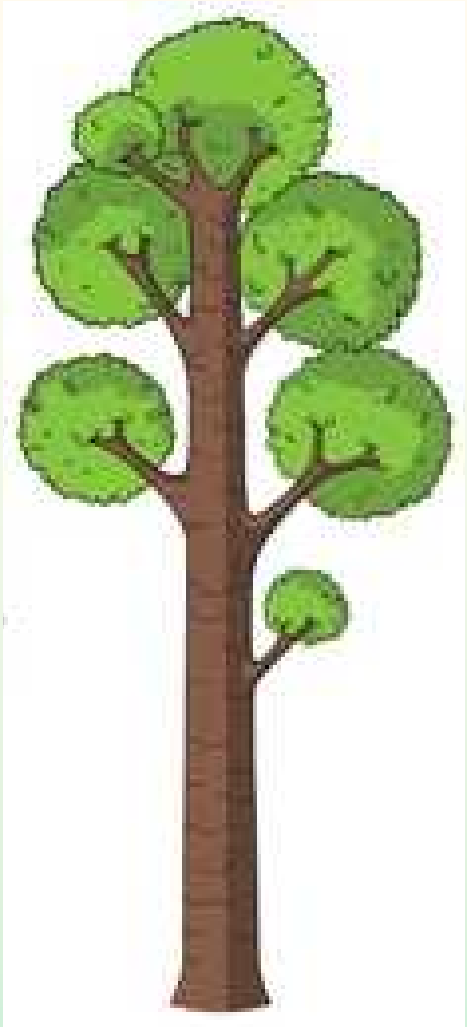

महारानी की नींद

अजय कुमार झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (त.)

"9:00 बज गए...महारानी की नींद नहीं पूरी हुई अभी ...दिन भर काम करते करते मेरा प्राण निकल जाता है....इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता....एक तिनका कोई नहीं हिलाता इस घर में ...पराए घर जाएगी तो पता चलेगा ..." झाड़ू लगाते–लगाते अन्नू की माँ बरस रही थी ।

सरयुग बाबू बाहर दालान पर बैठे इधर–उधर झाँक रहे थे। इच्छा थी कि एक कप चाय मिल जाए परंतु मांगने की हिम्मत नहीं पड़ी। कुछ देर रुक कर कंधे पर गमछा रखा और बाहर निकल गए। उन्हें मालूम था कि संभावित ज्वालामुखी के आसपास के क्षेत्र को खाली कर देना ही श्रेयस्कर होता है ।

अन्नु इस बात से बेखबर कि लावा उसके कमरे की तरफ बढ़ रहा है, इंस्टा पर रील्स स्क्रॉल किए जा रही थी । स्मार्टफोन के मिलने पर सुबह सुबह सोशल साइट्स पर एक नजर मार देना उसकी नित्य क्रिया में शामिल हो चुका था। और इस एक नजर में एक–दो घंटे बिस्तर पर ही यूँ बीत जाते जैसे दो–चार मिनट गुजरे हो ।

हालांकि पिछले कुछ दिनों से आकाश से उसकी बात नहीं हो पाने के कारण एक ज्वालामुखी उसके भीतर भी तैयार हो रहा था, बस लावा को उद्गम का स्रोत नहीं मिल रहा था।

"हम कहे थे फोन मत दीजिये ... इंटरनेट–फिंटरनेट देख देख के बच्चे हाथ से बाहर हो जाते हैं, लेकिन हम तो अंगूठा छाप ...हमारी क्यों सुनने लगे ये लोग .

..सारी पढ़ाई बस इन बाप बेटी ने की हुई है ..."अन्नु की माँ चिल्लाते हुए अन्नु के कमरे में घुसी । अन्नू की टेढ़ी नजर बस एक बार मां की तरफ गयी और फिर फोन के स्क्रीन पर उसकी अंगुलियाँ नाचने लगी ।

"ढिठाई की भी हद होती है...."दांत पीसते हुए वह अन्नु के कमरे में झाड़ू लगाने लगी ।

"इस लक्षण पर कहीं वास नहीं होगा, सता ले मुझे जितना सताना है ।" अन्नु की माँ बड़बड़ाती रही ।

अन्नु झटके से उठी और सीधा किचन जाकर बर्तन जोर–जोर से पटक–पटक कर धोने लगी । झनाझन और टनाटन की बर्तनों की आवाज की तीव्रता और उसकी लय से बर्तन धोने वाली महिला के मूड का आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है, और शायद यह खराब मूड के संकेत देने का सर्वाधिक प्रचलित संकेतक है ।

यहाँ स्त्रियों द्वारा बर्तन धोने की बात कर स्वयं को पितृसत्तात्मक मानसिकता रखने के गलत आरोप को स्वीकार करते हुए उन सभी महिलाओं का क्षमा प्रार्थी हूँ जो रसोई में पुरुष प्रवेश को ही स्त्री–पुरुष समानता का प्रतीक मानती है। मुझे आज भी याद है प्रोफेसर स्मृति किचन से ही निराला और महादेवी वर्मा की पंक्तियाँ एवं उसके भाव कितने उत्साह के

साथ बताती रहती और साथ ही साथ उनकी रोटियां बेलन और चकले के मध्य स्वछंद रूप से गोल–गोल घूमती रहती थी । मुझे आश्चर्य तो तब होता जब हिन्दी की मूर्धन्य विदुषी अपने सामान्य से शिक्षित एवं कहीं नहीं कार्यरत पति की, अखबार पढ़ते हुए कॉफी की मनुहार भी स्नेह के साथ पूरी करती थी ।

मेरे अप्रत्यक्ष आश्चर्य को भाँपते हुए उन्होंने एक बार मुझसे कहा था" एक उम्र के बाद पत्नियाँ माँ का स्थान ले लेती हैं.....और माँ का प्रेम निःस्वार्थ होता है , वह बच्चों के गुण दोष पर निर्भर नहीं करता । "

बर्तन की टनाटन की आवाज सुनकर अन्नु की माँ ने फिर झल्लाते हुए कहा– "रहने दो ....इतना तेवर हम किसी का नहीं सहते ...हम धो लेंगे बर्तन ... धक्के देकर किसी से कोई कुछ नहीं करा सकता ... .लोगों की आँखों में खुद पानी रहना चाहिए। "

अन्नु अपनी लय में बर्तन पटक–पटक कर धोती रही । उसे बुरा माँ की बातों का नहीं लग रहा था क्योंकि माँ की ऐसी बातों की तो आदत हो चुकी थी, उसे तकलीफ तो आकाश द्वारा की जा रही उपेक्षा से हो रही थी। वह सोचती रहती, "क्या यही अटल सत्य है कि, प्रेम संबंधों की मधुरता समय के साथ क्षीण होती जाती है...?"

बर्तन धुल कर अन्नू कुर्सी खींचकर बैठ गई, इतने में छोटा भाई रोता हुआ बाहर से आ गया। उसके हाथ पर और चेहरे पर चोट के निशान थे। ऐसा लग रहा था जैसे वह बाहर से पिट कर आया हो। माँ ने उसे देखा तो उनके भीतर की उष्णता और बढ़ गई। उन्होने चप्पल उठाया और भाई पर बरसाना शुरू कर दिया, "ले.....!! बाहर की कसर हम पूरी कर देते हैं, आंख खुलती नहीं है कि अशांति शुरू.... एक बाप है जिसे कोई मतलब ही नहीं, कहीं चौकड़ी लगाए बैठा होगा, मैं मरूंगी तभी इन सब को चैन मिल जाएगा।"

5–10 चप्पल खाकर वह छत पर जाकर चुपचाप बैठ गया। कुछ देर बाद सरयुग बाबू आते हैं, ऐसा लगा मानो पूरे महाभारत के समाप्त होने के बाद दुर्योधन का प्रवेश रण क्षेत्र में हो रहा हो ।

"आ गए... जरा भी ध्यान है घर का...? कौन क्या कर रहा है...? बेटी फोन में घुसे रहती है, बेटा गुंडागर्दी करता फिर रहा है और आप दुनिया भर की राजनीति बखान करते रहो। अपने घर के लोग संभल नहीं रहे और अमरिका को क्या करना चाहिए, क्या नहीं ...ये ज्ञान बघारते फिरते हैं। " अन्नु की माँ अपने दुर्योधन पर शब्दबाण छोड़ने लगी ।

"अरे भई... घर और अमेरिका में फर्क है ना....घर के राष्ट्रपति के चुनाव नहीं होते ....वो तो हम तुमको परमानेंट मान चुके हैं !!" सरयुग बाबू मुस्कुराते हुए बहस की दिशा बदल देना चाहते थे। वैसे भी उन्हें मालूम था कि उनकी पत्नी का गुस्सा क्षणिक होता है, और एक श्रेष्ठ पति वही हो सकता जो परिस्थितियों के अनुरूप संतुलन बना पाने में दक्ष हो।

अन्नु की माँ का भी मूड कुछ देर में सामान्य हो गया था, सुबह काम करते करते सब पर बरसना, ये अब सामान्य सी बात थी, वास्तविकता तो यही थी कि वह स्वभाव से बेहद सरल और उनका हृदय मोम की तरह था ।

अन्नु की माँ ने सरयुग बाबू की तरफ देखते हुए पूछा" चाय बना दें ...पीजिएगा ...?"

सरयुग बाबू भीतर ही भीतर आह्लादित हो उठे, इस बात को लेकर नहीं कि उन्हें चाय पीने को मिलेगा, बल्कि इस बात को लेकर कि... हाय ! आज भी सुनैना को उनका कितना ख्याल रहता है ।

उन्होंने अपनी सुनैना को प्यार भरे नैनों से देखते हुए कहा "नहीं अब रहने दो.... अब नाश्ता ही कर लेंगे।"

पिछले कुछ समय से सरयुग बाबू और उनकी पत्नी, अन्नु के विवाह को लेकर परेशान थे, कोई ढंग का रिश्ता आ नहीं रहा था , कुछ आते भी तो अन्नु किसी न किसी बहाने मना कर देती । कुछ के तो दहेज की माँग इतनी अधिक होती कि सरयुग बाबू विवश होकर मना कर देते ।

"ये बंगलौर वाला लड़का कैसा लगा आपको....??" अन्नु की माँ ने सरयुग बाबू की तरफ देखते हुए पूछा। "अच्छा है.... इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है... नौकरी भी किसी बड़े नामी कंपनी में कर रहा है, अब क्या चाहिए...?" सरयुग बाबू अन्नु की तरफ देखते हुए बोले।

"तो फिर दिक्कत क्या है...?? बात आगे क्यों नहीं बढ़ाते....??" सुनैना खुश होकर बोली ।

अन्नू के चेहरे का रंग उतर चुका था। अक्सर ऐसा होता था, जब भी उसके रिश्ते की बात होती वह चिढ़ जाती थी, लेन देन की चर्चा से तो उसके अंदर अग्नि की ज्वाला धधक उठती थी। उसे मालूम था कि चाहे जितने भी रिश्ते पिताजी देख लें, आकाश जितना खुश उसे कोई नहीं रख सकता। कितनी गंभीरता थी आकाश में, इतनी कम उम्र में उसने अपना बिजनेस कितना बढ़ाया था, आज तक उसका प्रेम निःस्वार्थ था, और सबसे अच्छी बात वह सभी की भावनाओं की बहुत कद्र करता था। यद्यपि कुछ दिनों से कही सुनाई बातों से वह आकाश को लेकर सशंकित रहने लगी थी, फिर भी उसका हृदय आकाश पर शक करने की कभी अनुमति नहीं देता था ।

वह उठकर जाने को थी कि सरयूग बाबू ने उसे बैठने का इशारा किया।

" ऐसे कब तक भागती रहोगी...? आज ना कल, किसी ना किसी के साथ तो ब्याहना ही है।"

" पापा हम उस घर में जाना कभी पसंद नहीं करेंगे, जहां के लोग शादी के लिए, मेरे बारे में जानने से पहले यह जानना अधिक पसंद करते हैं कि लड़की के पिताजी खर्च कितना करेंगे...?" अन्नु ने गुस्से में कहा ।

अन्नु की माँ उसकी तरफ देखते हुए प्यार से बोली – "बेटी ! अब अकेले तुम्हारे बदलने से तो समाज की परम्परा नहीं बदल सकती ना..."

उन्होंने सरयुग बाबू से फिर पूछा– " कितना मांग रखें हैं वो लोग ...? "

" जो भी रखे हों, दिया जाएगा , बस अन्नू खुशहाल घर में चले जाए , सोचे हैं सड़क के पास वाले 6 कट्ठे वाले प्लॉट को निकाल देंगे...वैसे भी उसको अन्नु के लिए ही लिए थे, उसी के काम आ जाएगा ।" सरयूग बाबू लंबी सांस खींचते हुए बोले ।

सुनैना और अन्नु दोनों को लड़के वालों की मांग का अंदाजा हो गया था क्योंकि, सड़क किनारे वाला प्लॉट काफी महंगा था । अन्नु से रहा नहीं गया, वह तमतमाते हुए बिना कुछ बोले छत पर चली गई। उसका गोरा चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। उपर जाकर फोन देखा तो आकाश के कई मिस्ड कॉल थे। उसने कॉल बैक तो किया लेकिन वह अकाश को जता देना चाहती थी कि वह उससे बहुत नाराज है, इसलिए उसने रूखे स्वर में कहा–" बोलो अब क्यों हम याद आए तुम्हें ...?

" कुछ खास नहीं, बताया था ना कि पेट्रोल पंप की ओपनिंग है परसों, कुछ लोगों को निमंत्रण देने तुम्हारे गांव आया था, सोचा तुम्हारे मम्मी पापा को भी आमंत्रित किया जाए, इसलिए तुमसे पूछ रहा था।" आकाश ने प्यार से उत्तर दिया ।

" कोई जरूरत नहीं है ज्यादा रिश्ता–विश्ता बढ़ाने की...। " अन्नु ने रुखाई में उत्तर दिया।

"अरे क्या हुआ तुम्हें ...? तुम अब भी नाराज बैठी हो तुमसे बताया था ना कि अभी कुछ दिन थोड़ा व्यस्त हैं, इसलिए बात नहीं कर पा रहे हैं। " आकाश ने फिर समझाते हुए कहा ।

" मुझे बात करनी भी नहीं है, तुमसे बात करके हमें कोई अमृत थोड़ी ना मिल जाता है?" अन्नु अपने अंदर दबी सारी नाराजगी बाहर कर देना चाहती थी ।

" अच्छा ठीक है....बाद में गुस्सा कर लेना , अब बताओ जल्दी क्या करना है....बुलाएँ उनको ...?" " आज शाम आना घर पर, फिर बताएँगे । " अन्नु ने कहा ।

" ठीक है...!! आते हैं ..." बोलकर आकाश ने फोन रख दिया।

अन्नू को शाम का बेसब्री से इंतजार था, वह आज मन को तसल्ली दिला देना चाहती थी कि आकाश का प्रेम कितना पवित्र है, उसे यह भी तसल्ली कर लेनी थी कि आकाश का प्रेम केवल उसके सौन्दर्य के लिए आकर्षण नहीं था बल्कि इस प्रेम में साथ जीवन बिताने का, हर सुख–दुख में एक दूसरे का सहारा बनने का वचन और उस वचन को निभाने की निष्ठा थी ।

शाम के सात बज गए थे, आकाश ने घर की घंटी बजाई। अन्नू बाहर आकर उसे अंदर आने का इशारा किया, दोनों अंदर आए, अन्नु ने मुख्य दरवाजा बंद कर दिया। आकाश ने अंदर आते ही पूछा " तुम्हारे माँ पिताजी नहीं दिख रहे ...?"

" शादी में गए हैं, आ जाएंगे थोड़ी देर में..." अन्नु ने मुस्कुराते हुए कहा।

अन्नु की मुस्कान लाखों में एक थी, उसकी मुस्कुराहट से ऐसा लगता था मानों गुलाब की पंखुरियाँ बारिश बनकर धीमे–धीमे बरस रही हो। हालांकि आकाश इस बरसात में भी थोड़ा असहज महसूस कर रहा था, क्योंकि वह अन्नु के घर पर अन्नू से अकेले में पहली बार मिल रहा था।

अन्नु का सौन्दर्य इतना विहंगम था कि उसकी हर अदा सुन्दरता की नयी परिभाषा गढ़ देती थी। गोल चेहरा, दूधिया रोशनी सा चमकता गोरा रंग, आसमान में लहराते काले मेघ की तरह घने लंबे बाल , गहरी बड़ी बड़ी आँखें, उसे देख कर लगता मानों उसकी तारीफ में सौन्दर्य विज्ञान का एक पूरा चैप्टर लिखा जा सकता था । गहरे टील रंग का सूट और उसपर एक प्यारा दुपट्टा उसकी खूबसूरती में चार ही नहीं दर्जनों चाँद लगा रहे थे ।

अन्नू पास आकर बैठ गई, आकाश का जी चाहा ईश्वर द्वारा दिये इस उपहार का प्रतिविम्ब हमेशा के लिए अपनी आँखों में कैद कर ले, लेकिन थोड़ा दूर हटते हुए वह खुद को सहज करने की कोशिश करने लगा। वह आस पड़ोस के लोगों की मानसिकता से परिचित था और वह नहीं चाहता था कि उसकी वजह से लोग नाहक अन्नु को बदनाम करें।

दूर होकर बैठते हुए आकाश ने मुस्कुराते हुए पूछा "बताओ क्यों बुलाया...?"

अन्नु ने उसकी हथेली को अपनी हथेली में रखते हुए कहा" तुम इतने घबराए क्यों लग रहे हो...?"

" हम भला तुमसे क्यों घबराने लगे ...?" आकाश ने हँसते हुए कहा ।

" एक बात पूछें ...?" अन्नु ने प्यार से आकाश की ओर देखते हुए कहा ।

" हां पूछो ...उसी के लिए तो तुमने बुलाया है ।" – आकाश ने खुश होकर उत्तर दिया ।

" मेरे पिताजी के पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है, क्या यह जानते हुए भी तुम हमसे शादी करना चाहोगे ....?"– अन्नु ने आकाश की आँखों में देखते हुए पूछा ।

" ये कैसी बातें कर रही हो...? हम भला तुम्हारे पिताजी से क्या लेंगे , और सबसे बड़ी बात.....क्यों लेंगे ...?" आकाश ने शांत लहजे में प्यार से उत्तर दिया ।

" पिता जी अक्सर कहते रहते हैं वो कुछ जमीन बेच देंगे , लेकिन हम उनको ऐसा नहीं करने देंगे, चाहे तुमसे ही मेरी शादी क्यों न हो ...हम तुम्हें भी वो जमीन नहीं लेने देंगे ।" अन्नु ने कहा।

आकाश को अजीब लगा, उसने गुस्से में पूछा" तो क्या तुम इसी बकवास के लिए बुलाई थी ? पिताजी से कहो संपत्ति बचा कर रखें ,जमीन रहेगी तो आज ना कल तुम्हारे भाई के काम आयेगा , भगवान ने हमें इतना भी कंगाल नहीं बनाया है कि हम तुम्हारे पिताजी की जमीन लेंगे ।"

अन्नु का मन गदगद हो उठा , " हाय ! मैं सच में कितनी भाग्यशाली हूँ जो मुझे ऐसे विचारों वाले इंसान का स्नेह प्राप्त है , औरों से कितना अलग है इनका व्यक्तित्व!" लेकिन अभी तो परीक्षा की शुरुआत थी , यद्यपि वह आत्मग्लानि से दबती जा रही थी , जिसने निःस्वार्थ प्रेम किया था उससे ,आज वह उसी देवता की परीक्षा ले रही थी, फिर भी वह अपने मन में कोई दुविधा नहीं रखना चाहती थी।

इस बार अन्नु का दूसरा प्रश्न था– "क्या हम यह विश्वास कर सकते हैं कि तुम हमेशा के लिए सिर्फ मेरे रहोगे....?"

अब आकाश के लिए यह बर्दाश्त करना संभव नहीं प्रतीत हो रहा था, वह उठ खड़ा हुआ – " इस प्रश्न का उत्तर मैं तुम्हें नहीं देना चाहता, रिश्ते विश्वास पर टिकते हैं , जब विश्वास ही ना रहे तो ऐसे रिश्तों का क्या है ..., मुझे अब घर जाने दो , बहुत काम है ।"

अन्नु आकाश की भावनाओं को समझ चुकी थी, वैसे भी उसका मन इस बात को कभी स्वीकार नहीं करता था कि आकाश का संबंध किसी और के भी साथ हो सकता है ,वह मन ही मन आकाश को दोनों परीक्षाओं में उत्तीर्ण घोषित कर चुकी थी । अब आखिरी और और सर्वाधिक महत्वपूर्ण परीक्षा की बारी थी। अन्नु के मस्तिष्क में यह बात आ गयी थी कि सारे लड़के प्रेम का स्वांग बस शारीरिक आकर्षण के कारण रचते हैं । वह आकाश को भी इस पैमाने पर परख लेना चाहती थी । इसलिए उसने खड़े होकर आकाश का चेहरा अपने हाथों में लेते हुए कहा " तुम मेरे सर्वस्व हो ....तुम पर कैसे ना विश्वास करें ...? " वह आकाश को निहारने लगी , अन्नु कहीं गहराई में खोने लगी , एक पल को वह अपनी परीक्षा से भी बाहर आ जाना चाहती थी , उसे आकाश पर अथाह प्यार आ रहा था , वह आकाश की मासूम आँखों को चूम लेना चाहती थी ,वह आकाश के गले लग गई। आकाश अदृश्य सी हलचल के मध्य खुद को बंधा महसूस कर रहा था। उसने अन्नु को अलग करना चाहा ,अन्नु की पकड़ और मजबूत होने लगी ,अन्नु का चेहरा आकाश के चेहरे के समीप आता जा रहा था। अन्नु के होंठ आकाश को चूमने के लिए बढ़ रहे थे तभी आकाश ने अन्नु को झटके से दूर कर दिया।

"नहीं....अन्नु ...!! ये पाप होगा, हमारे संबंधों की एक मर्यादा है, जब तक हमारे घर वाले हमारे संबंधों को स्वीकार नहीं कर लेते, तब तक हमारा संबंध एक दोस्त से ज्यादा कुछ नहीं होना चाहिए , मेरा प्रेम

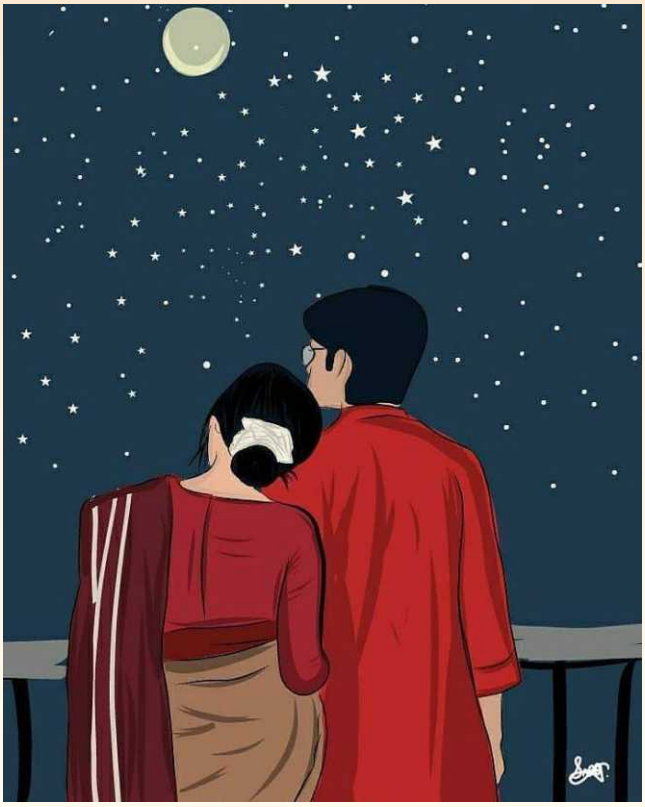

तुम्हारे लिए अटल है , और ईश्वर ने चाहा तो तुम मेरी जीवनसंगिनी अवश्य बनोगी ।"

अन्नु झटके से दूर हट गयी , वह पश्चाताप से भर गयी ,आत्मग्लानि के मारे उसका हृदय बैठ रहा था, उसकी आंखों से आंसुओं की धार गालों से होकर टपकने लगी।

" हे भगवान ...! उसने यह क्या कर दिया, इतने निर्मल मन वाले देवता समान व्यक्तित्व पर शक किया, उनकी परीक्षा लेनी चाही, ईश्वर उसे कभी माफ नहीं करेंगे।"

वह आकाश के चरणों में गिर पड़ी, आकाश इस बात से बेखबर था कि उसकी कई परीक्षाएं हो चुकी थी और वह अनजाने में ही सभी में उत्तीर्ण रहा था। आकाश ने उसे उठा कर उसके सिर पर अपना हाथ प्यार से रखा, प्यार से थपकी दी, अन्नु के चेहरे पर शांति का भाव दिख रहा था। अन्नु के अंदर हिम्मत का संचार हो गया था , वह दृढ़प्रतिज्ञ थी । उसने निर्णय लिया, वह माँ–पिताजी को मना लेगी, गाँव समाज , जात–पात के ताने भी सुन लेगी लेकिन किसी और को अपने देवता की पत्नी कहलाने का अवसर नहीं देगी।

सेवानिवृत्ति

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार परिवार के निम्नलिखित कार्मिक अपने कार्यालयीन दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। प्रहरी परिवार उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करता है।

क्र.स.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	श्री लक्ष्मण दुबे	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31 मार्च, 2022
2.	श्री उपेन्द्र प्रसाद नं.–1	पर्यवेक्षक	30 अप्रैल, 2022
3.	श्रीमती बीना सिन्हा	लिपिक	30 अप्रैल, 2022
4.	सुश्री मीना रजक	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31 मई, 2022
5.	श्री बलराम प्रसाद सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31 जुलाई, 2022

अम्लीय वर्षा

अमित कुमार झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

मैं दिन के दस बजे नोएडा स्थित अपने कार्यालय जा रहा था कि अचानक वर्षा शुरू हो गई। भींगने से बचने के लिए मैं सड़क किनारे एक पेड़ के नीचे रुक गया। परन्तु बारिश तेज होने के कारण पेड़ के नीचे भी पानी की कुछ बूंदें गिर रही थी, जिस कारण मैं भी भींगने लगा था। अचानक मेरे कपड़े का कुछ भाग धीरे–धीरे काला होने लगा था। मैं चकित था..... तभी पानी की एक और बूंद मेरे सामने कमीज पर गिरी और कपड़े का वह भाग गीला होने के साथ काला भी हो गया था। मुझे मेरे सवाल का जवाब मिल गया था....

पेड़ों पर जमी धूल और हानिकारक वाष्प–कण बारिश के साथ नीचे गिर रहे थे और पेड़ के नीचे का पूरा भाग भींगने के साथ अंशतः काला हो रहा था।

नोएडा भारत के सर्वाधिक औद्योगिक क्षेत्रों में आता है। अतः यहाँ की स्थानीय वायु में हानिकारक गैसों की भरमार है। जो कि कारखानों के साथ यहाँ अत्यधिक संख्या में मौजूद गाड़ियों से निकलती हैं। ये गैस के कण वायु में तैरते रहते हैं, और पेड़ों या ऊँची ईमारतों के ऊपर चिपक जाते हैं। बारिश के साथ ये नीचे जमीन पर आ गिरते हैं। इस तरह, वर्षा वायुमंडल को उन गैस कणों से जो हवा में तैरते रहते हैं, से भी स्वच्छ करती है परन्तु जब ये हानिकारक तत्व जमीन पर गिरते हैं तो भूमि के साथ जलाशयों को भी, जहाँ ये बहकर पहुँचते हैं, दूषित करते हैं। ये भूमि और जल के साथ इनमें रहने वाले जीवों और पेड़–पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। वैज्ञानिक शब्दावली में इसे अम्लीय वर्षा (ACID RAIN) कहते हैं, क्योंकि इस जल की प्रकृति अम्लीय होती है।

लगभग दुनिया में फैल चुके प्रदूषण के इस संकट का निदान फिलहाल तो नजर नहीं आ रहा, क्योंकि औद्योगिकीकरण, जो कि इस समस्या की जड़ है, तो समय की मांग है। आवश्यकता है इसे नियंत्रित रखने एवं सुनियोजित करने की, ताकि विकास की जगह सतत विकास (SUSTAINABLE DEVELOPMENT) सुनिश्चित हो सके। इस संकट से निदान के लिए ना केवल वृहत पैमाने पर वैश्विक स्तर पर ठोस नीति की आवश्यकता है, बल्कि उसे अमली जामा पहनाने की जरूरत है। इसके साथ ही इस बारे में व्यापक जन–जागरूकता और जन– भागीदारी भी उतनी ही आवश्यक है। हर व्यक्ति इसमें अपना योगदान दे सकता है। जहाँ तक संभव हो सार्वजानिक परिवहन और साईकल का उपयोग, कारपूलिंग, वाहनों के पहियों में उचित मात्रा में वायु दाब का उपयोग इत्यादि छोटे लेकिन प्रभावशाली कदम हो सकते हैं। काम के बाद विद्युत् उपकरणों को बंद करने की बात करते तो सभी हैं, पर उसे हकीकत में भी बदलने की जरुरत है। इन उपायों से हम अपने स्तर से अम्ल वर्षा के दुष्प्रभावों को काफी हद तक रोक सकते हैं।

एक टीस

राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक बार फिर नहीं हुई सुलह,
निमंत्रित हो गया भीषण कलह।
नभमंडल में छायी काली बौछार,
सिसकती मानवता ने देखे नरसंहार।

रूस यूक्रेन में गरजीं तोपें,
बमबारी से घायल कान के पर्दे।

अट्टालिकाएं हो रहीं ध्वस्त,
शासक अपने अहम से ग्रस्त।
सड़को पर सूख रहा खून,
जलती देह ज्यों पिघलता मोम।
कैसा ये विकट युद्ध व्यापार
भूखे–प्यासे बच्चे, माँ–बाप लाचार।
माना थम जाएगा ये उन्माद,
पर रह जाएगी टीस की धार।
सरहद से नहीं लौटेगा बेटा,।
माँ के अश्रुपूर्ण नेत्र पथराएंगे।
रण से आएगी अर्थी आंगन में,
बिना पालक, बालक बिलखेंगे।
एक वृद्ध पिता होगा निढाल
पत्नियों की सूनी होगी भाल।

क्षत–विक्षत शवों के चेहरे,
बिखरेंगे जीवन में अंतहीन अंधेरे।
हे मानव, छोड़ नफरत और अत्याचार,
अपना ले समझौतों का व्यवहार।

प्रहरी 66वें अंक (प्रथम ई–संस्करण) का लोकार्पण की तस्वीरें

महिला दिवस समारोह के मनोरम दृश्य

महिला दिवस समारोह के मनोरम दृश्य

कार्यालय के कार्मिकों द्वारा वृक्षारोपण